चकमक

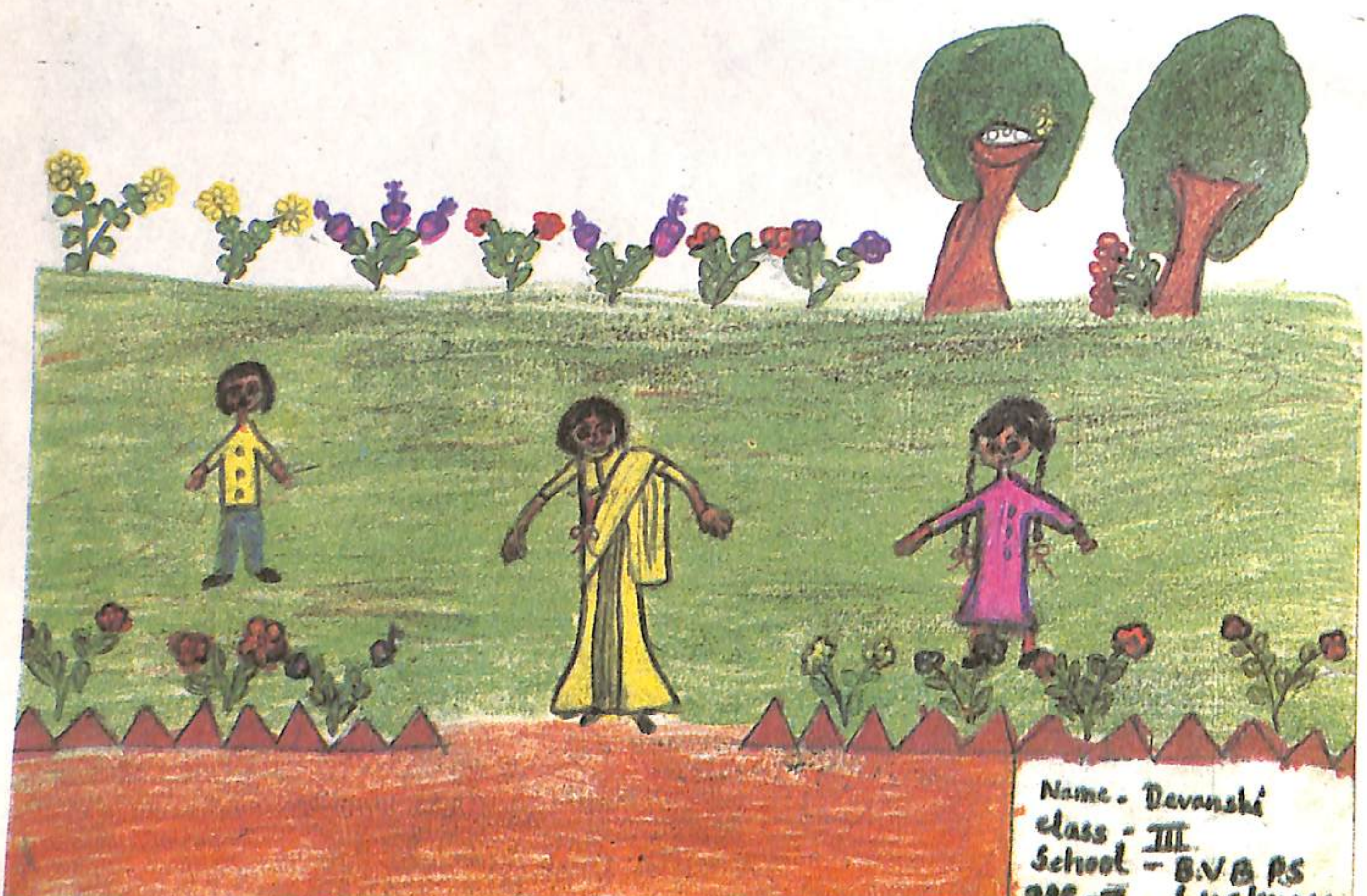
मई, 2000 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00



पिटारा उत्सव



• धवल वागेला, पाँच वर्ष, इन्दौर, मध्यप्रदेश



• देवांशी जैन, लखनऊ, उत्तरप्रदेश

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

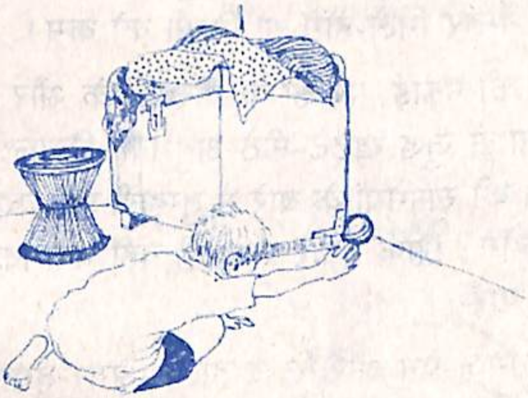
मई, 2000 के 176 वें अंक में



संसार के चारों ओर पहली यात्रा : यह एक ऐसी यात्रा की कहानी है जिससे साबित हुआ कि पृथ्वी गोल है। मैगेलन नाम के एक साहसी नाविक और उसके साथियों ने 500 साल पहले अंध महासागर से प्रशान्त महासागर तक का मार्ग खोज निकाला। इस कठिन यात्रा की रोमांचक कहानी पढ़ो पेज 5 से।



अमन तेलंग, तीसरी, भोपाल, म. प्र.



कहानी

कविताएँ

रोचक शृंखला

हर बार की तरह

मेरा पन्ना

धारावाहिक

और भी बहुत कुछ

आवरण : पिटारा उत्सव का बाल मेला। छाया : भावना जायसवाल व नीरज रिछारिया

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

तुम्हारे रिजल्ट के बारे में

शालू सुबह जल्दी उठ गई। आज उसका रिजल्ट मिलने वाला है। स्कूल सुबह सात बजे से लगता है। और शालू को अपने घर से स्कूल तक पहुँचने में सिर्फ दस मिनट लगते हैं। लेकिन आज वह साढ़े छह बजे से तैयार होकर आँगन में टहल रही है। माँ ने एक-दो बार कहा भी कि शालू अभी तो देर है, कुछ नाश्ता ही कर ले। लेकिन शालू को तो स्कूल जाने की जल्दी थी। बस मीना का इन्तज़ार था। वो दोनों रोज़ ही साथ-साथ स्कूल जाती हैं।

आखिरकार घर के बाहर वाले दरवाज़े पर से किसी ने आवाज़ दी। शालू ने जल्दी से जाकर दरवाज़ा खोला। वहीं से आवाज़ देकर शालू ने कहा, माँ हम स्कूल जा रहे हैं। और चल दी स्कूल की तरफ। स्कूल में भी रिजल्ट मिलने तक शालू को हड़बड़ी-सी मची रही। और, जब उसका रिजल्ट उसके हाथ में आ गया तब कहीं जाकर उसे संतोष हुआ। चलो जितने नम्बर सोचे थे उसके आसपास ही मिल गए। लेकिन उसके साथ पढ़ने वाले कुछ लड़के-लड़कियाँ अपने रिजल्ट से खुश नहीं थे। उन्हें लग रहा था कि उन्हें इससे ज़्यादा नम्बर मिलना चाहिए थे।

तुम्हारे साथ भी क्या ऐसा कुछ हुआ है। तुम सभी के रिजल्ट मिल चुके होंगे। किसी को उम्मीद से ज़्यादा नम्बर मिले होंगे तो किसी को कम।

तुम्हारी साल भर की पढ़ाई, परीक्षा के तौर तरीके और पूछे गए प्रश्नों के बारे में तुम क्या सोचते हो? परीक्षा से जुड़े खट्टे-मीठे अनुभवों, रिजल्ट के बाद मिली डाँट-फटकार या तारीफ और परीक्षा की खामियों के बारे में तुम्हारी राय क्या है? क्या तुम अपने अनुभव हमारे साथ बाँटना चाहोगे? सिर्फ हमारे साथ ही नहीं चकमक के माध्यम से और भी बहुत सारे साथी इन्हें जान पाएँगे।

तो बस उठाओ कागज़-पेन और लिख डालो। अगर तुम जल्दी ही लिखकर भेजोगे तो हम जल्दी ही किसी अंक में उन्हें छाप सकेंगे।

हमें इन्तज़ार रहेगा तुम्हारे अनुभवों का।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-15 अंक-11 मई, 2000

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



बेर खाने गए

एक बार की बात है कि मैं अपनी सहेली के साथ उसके खेत पर गई। तो मैंने कहा कि मुझे बेर चाहिए। वो बोली की मेरे खेत पर बेरी नहीं लगी। तब वह मुझे किसी और सहेली के खेत पर ले गई। फिर हम दोनों उसके साथ औरों के खेत पर गए। तभी मुझे बात याद आई कि मैंने घर पर मम्मी से नहीं कहा है। और मैंने कहा कि मुझे थोड़े से ही बेर मिल जाएँ और जल्दी घर पर जाना है। तभी मुझे उसकी मम्मी ने कहा कि तुम दोनों दूसरे रास्ते से जाओ। हम दोनों दूसरे रास्ते गए।

मुझे क्या मालूम की इस रास्ते से हम दोनों भूल जाएँगे और रात्रि का समय हो गया। हम दोनों को थोड़े बेर मिल गए। फिर हम दोनों रास्ता भूल गए और वहीं पर रोने लगे। मुझे कोई नज़र नहीं आया कि मैं उसके साथ अपने घर चली जाऊँ और मेरे घर पर किसी को भी पता नहीं था कि रेखा बेर लेने गई। सभी जन मेरा इन्तज़ार कर रहे थे कि रेखा अभी तक नहीं आई। जो मेरे साथ मेरी सहेली गई थी वो भी घर पर नहीं कह गई थी और उनके सभी जन हम पर टूट पड़े कि तुम मेरी बेटी को अपने साथ मत ले जाया करो। और मेरी मम्मी से भी उसकी मम्मी की लड़ाई हुई। और हम दोनों का तभी से बोलना बन्द हुआ।

सुरेश कुमार मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.







चित्र: रजनी, तीसरी, भोपाल, म. प्र.



प्रिया नांदगावकर, चौथी, भोपाल, म. प्र.

अरे! सुनिए

पिछले साल पन्द्रह अगस्त से तीन दिन पूर्व की बात है। वार्षिक खेल और पन्द्रह अगस्त की ज़ोर-शोर से तैयारी हो रही थी। रोज़ की तरह, उस दिन भी अभ्यास के बाद हम लोग आखिरी पीरियड में हाऊस मीटिंग में गए। काफी थक गए थे, गर्मी का मौसम भी था। इसलिए जैसे ही मीटिंग खत्म हुई हम लोगों ने पानी पिया। अभी छुट्टी नहीं हुई थी इसलिए हम लोग पास की सीढ़ी पर बैठ गए अपना-अपना बस्ता लेकर।

हम तीन थे – मैं और मेरी दो सहेलियाँ रसिका और स्नेहा। तभी मेरी एक और सहेली रीतु हमारे पास आई और बोली ''अजीब लोग हैं?'' तो हमने पूछा, ''क्यों क्या हुआ?'' तो बोली, ''एक दीदी मेरी बोतल से बिना पूछे पानी पी रही थीं।'' तो हमने पूछा, ''तो तुमने क्या कहा?'' वह बोली, मैंने कहा, ''अरे! सुनिए।'' और जैसे ही उसने ऐसा कहा, वहाँ पास से गुजर रहीं दो दीदियों ने सोचा की हमने उनसे कहा और पलटकर पूछा, ''क्या, तुम लोगों ने हमसे कहा?'' हमें बड़ी हँसी आई और उन्हें हमने बताया कि हम आपस की बात कर रहे थे तो वह मुँह से निकल गया था।

जैसे ही वह गईं मेरी एक सहेली ने कहा, ''क्यों न जब कोई दीदी इधर से गुजरें तो हम जोर से कहें –''अरे सुनिए!'' फिर क्या, बस यह खेल शुरू हो गया। अब जो भी गुजरता वह पलटता और पूछता। हम लोग तो हँसे ही जा रहे थे और इतना हँसे की पेट दर्द करने लगा।

अगले दिन हमने अपनी सारी कक्षा को यह बात बताई और सब हँसे और हमें भी बड़ी हँसी आई। यह कहकर ''अरे सुनिए!''

श्रुति चौबे, छठवीं, इलाहाबाद, उ.प्र.

पहेली

दो द्वारों का एक मकान।
जिसके अगल-बगल मैदान॥

सोनम गुप्ता, दूसरी, शाहगढ़, सागर, म.प्र.

विशेष

संसार के चारों ओर

पहली यात्रा

आज हम बहुत आसानी से कहते हैं कि पृथ्वी गोल है। लेकिन 500 साल पहले यह कहना इतना आसान नहीं था। उस समय तक तो यह भी पता नहीं था कि कहाँ-कहाँ समुद्र है और कहाँ ज़मीन है। हमेशा से लोगों की जिज्ञासा से कुछ न कुछ नया खोजा जाता रहा है। ऐसे ही कुछ लोगों ने मिलकर अंध महासागर से प्रशान्त महासागर तक का मार्ग खोज निकाला, और यह भी साबित किया कि पृथ्वी गोल है।

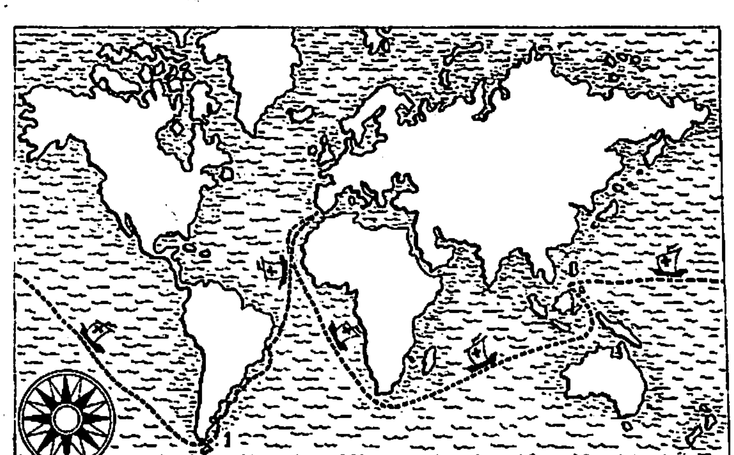
20 सितम्बर सन् 1519 को स्पेन के सेवील्या नामक बन्दरगाह से छोटे-छोटे पाँच जहाज़ों का एकसमुद्री बेड़ा रवाना हुआ।

जहाजों के नाम थे 'सान-एन्टोनियो', 'ट्रीनीडाड'(त्रिनिदाद), 'कन्सेप्शियन', 'विक्टोरिया' और 'सान्टियागो'। इस बेड़े में दो सौ उनतालीस अफसर तथा नाविक थे।

एडमिरल (नौसेनापति) फेरनान मैगेलन ने इस स्पेनी जहाज़ी बेड़े का नेतृत्व किया। एडमिरल मैगेलन पुर्तगाल का रहने वाला था।

मैगेलन ने अपने लिए बहुत कठिन लक्ष्य बना रखा था – अटलांटिक या अंध महासागर से प्रशान्त महासागर का मार्ग ढूँढ निकालना।

इस मानचित्र को देखो। दो सबसे बड़े महासागरों – अटलांटिक व प्रशान्त – के बीच अमेरिकी महाद्वीप फैला हुआ है। इस महाद्वीप का विस्तार बर्फीले आर्कटिक महासागर से ठण्डे अंटार्कटिक तक है। अमेरिका के पश्चिम का महासागर उस समय लोगों को मालूम हो चुका था और उसे 'विशाल दक्षिणी समुद्र' कहा गया था।



मैगेलन से पहले दूसरे समुद्री नाविकों ने इस महासागर तक पहुँचने का प्रयत्न किया, किन्तु हर तरफ भूमध्यरेखा के समीप तथा उसके काफी दूर उत्तर व दक्षिण में –उन्हें अमेरिका के अचल तट से ही टकराना पड़ा। और फिर यह धारणा बन गई कि अटलांटिक महासागर से जलमार्ग द्वारा 'विशाल दक्षिणी समुद्र' तक जाना असम्भव है।

मैगेलान इससे सहमत नहीं था। उसे विश्वास था कि दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी छोर पर एक ऐसा जलडमरूमध्य है जो दोनों महासागरों को जोड़ता है। मैगेलान जहाज और नाविक मिल जाने पर इस जलडमरूमध्य की खोज में जाने के लिए तैयार था। अपने देश पुर्तगाल में उसने कई वर्षों तक इसके लिए काफी दौड़धूप की, पर बेकार ही। उसे अपनी मातृभूमि छोड़नी पड़ी वह स्पेन गया। वहाँ मैगेलन पर विश्वास किया गया और उसे जहाजी बेड़े का एडमिरल बनाया गया।

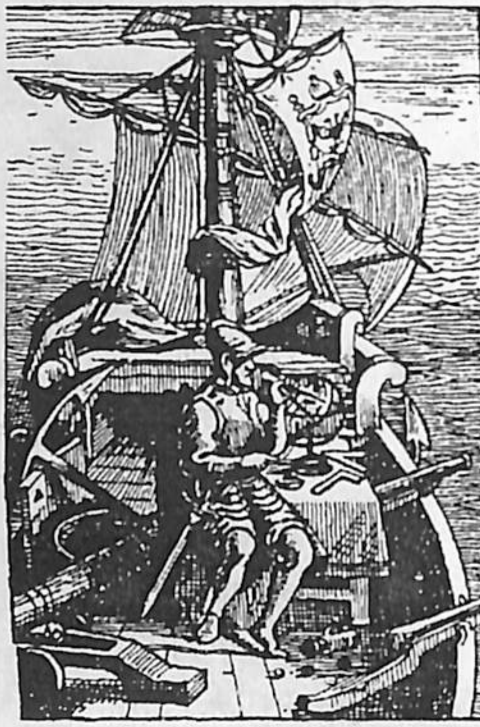
इस तरह पुर्तगाल निवासी मैगेलन स्पेनी बेड़े का नायक बन गया। मैगेलन से पहले ऐसी लम्बी समुद्री यात्रा की हिम्मत किसी की नहीं हुई थी।

इस यात्रा में सफलता मिलने पर मैगेलन को स्पेन में बहुत बड़ी नियुक्ति और विशाल धनराशि मिलनी थी। लेकिन उसके लिए उसे बहुत बड़ा मूल्य भी चुकाना पड़ा। स्पेन के शासक के साथ किए गए समझौते के अनुसार यह तय था कि मैगेलन को 'नए' खोजे गए क्षेत्रों का गवर्नर नियुक्त किया जाएगा। इतना ही नहीं, इस यात्रा से हासिल होनेवाली आमदनी का बीसवाँ हिस्सा भी उसे दिया जाना तय था। इन कारणों से मैगेलन के नेतृत्व में काम करनेवाले अभिमानी स्पेनी कप्तान, उससे डाह व घृणा करने लगे। उन्होंने सौगन्ध खाई कि कोई बढ़िया मौका पाते ही वे मैगेलन को दूसरी दुनिया का रास्ता दिखा देंगे।

यात्रा प्रारम्भ होने के पहले ही मैगेलन के शत्रुओं ने उसके कार्य में तरह तरह की बाधाएँ डालीं। उन्होंने उसे साज़-सामान और खाने-पीने की चीज़ें खरीदने के लिए पैसे देने में आनाकानी की। उन्होंने उसकी हत्या तक कर डालने का प्रयत्न किया। उसे पुराने, ढीले-ढाले अंजरों-पंजरों वाले जहाज़ दिए गए।

मैगेलन ने हिम्मत न हारी। उसने सभी बाधाओं पर विजय पाई। उसने धन प्राप्त किया, दो वर्ष की समुद्री-यात्रा के लिए साज़-सामान तथा खाद्य-सामग्री जुटाई, जहाज़ों की मरम्मत करवाई और जहाजियों को प्रशिक्षण देकर तैयार किया।

मैगेलान का यह स्वप्न था कि वह लोगों को विश्वास दिलाएगा कि पृथ्वी गोल है। लेकिन उस समय कुछ इने-गिने वैज्ञानिकों को ही पृथ्वी के आकार के विषय में दिलचस्पी थी। राजा-महाराजाओं व सौदागरों को इसमें कोई रुचि न थी। मैगेलान की यात्रा में उन्हें दिलचस्पी हुई तो केवल इसलिए कि इसकी सफलता से उन्हें भी मालामाल होने के सुनहरे मौके मिलेंगे।



अब तुम कल्पना करो उस ज़माने की जब यूरोपीय देशों में काली मिर्च सोने के बराबर थी। सच सच बताओ, क्या तुम्हें बहुत आश्चर्य नहीं होता, बेहद हँसी न आती, यदि तुम आज किसी दुकान में यह सुनो कि – 'आपने जो चीज़ें खरीदी हैं उनकी कीमत है काली मिर्च के बीस दाने!'

पूर्वी (यानी हमारे यहाँ के) मसाले-मिर्च, दालचीनी, अदरक-यूरोपीय देशों में अमीरों के भोजन में डाले जाते थे। इनसे भोजन काफ़ी चटपटा और स्वादिष्ट हो जाता है। उस समय उपरोक्त वस्तुएँ दवाई तौलनेवाले तराज़ू पर रत्ती-रत्ती, ठीक-ठीक तौली जाती थीं। इन वस्तुओं का एक-एक कण भी बड़ा कीमती था। पूर्वी दवाएँ, मसलन कपूर, भी इसी प्रकार मूल्यवान थीं। ये वस्तुएँ पैदा होती थीं भारत व मौलुक्का द्वीप-समूह में। वहाँ उन दिनों ये वस्तुएँ आजकल के जौ और मटर की भाँति सस्ती थीं।

पूर्वी मसाले और दवाएँ यूरोप में इतने महँगे क्यों होते थे? इसलिए कि यूरोप का मार्ग लम्बा व कठिन था। पूरब से माल लानेवाले सौदागरों को मार्ग में भयंकर तूफ़ानों और जल-बवण्डरों से

सामना करना पड़ता था। समुद्री तथा ज़मीनी डाकुओं के गिरोह सौदागरों को मार डालते थे। फिर ये सौदागर जिन देशों से होकर गुजरते उनके शासक उनसे बहुत बड़ी रकम कर की शक्ल में वसूलते थे। दूरवर्ती पूरब और यूरोप के बीच के इस मार्ग में सौदागरों को दो-तीन वर्ष लग जाते थे।

1453 में, तुर्कों ने कुस्तुन्तुनिया को जीत लिया था। इसके बाद तो पूरबी देशों में जाना बहुत ही कठिन बल्कि लगभग असम्भव-सा हो गया था। इसलिए यूरोप में मिर्च की एक चुटकी, मलाया में मिर्च के एक पूरे बोरे से भी महँगी थी।

मैगेलन को इस यात्रा के लिए भेजते हुए स्पेन के धनी-मानियों को यह आशा थी कि वह 'मसालों के द्वीपों' के लिए कोई दूसरा, पहले से कहीं छोटा और बिना ख़तरों वाला मार्ग ढूँढ निकालेगा। इसके अतिरिक्त स्पेनियों को यह आशा भी थी कि मोलुक्का द्वीप समूह को वे अपने राज्य में मिला लेंगे। अतएव उन्होंने उसकी यात्रा के साज़-सामान के लिए पैसे खर्च किए।

यह जहाजी बेड़ा बिना किसी विशेष घटना के अमेरिका के किनारे तक पहुँच गया। किन्तु अमेरिका के किनारे पर पहुँचने के बाद ही मुख्य कठिनाइयों की शुरूआत हुई। मैगेलन की धारणा थी कि दोनों महासागरों के बीच जलडमरूमध्य है। पर वह कहाँ स्थित है, यह वह ठीक-ठीक नहीं जानता था। अतएव उन्हें हर एक खाड़ी और हर एक खलीज में जाना पड़ा और उस रहस्यपूर्ण और इच्छित जलडमरूमध्य की सभी जगह खोज करनी पड़ी।

इस कार्य में बहुत समय लग गया। दक्षिणी गोलार्द्ध की भीषण और कठोर सर्दी दिन-ब-दिन बढ़ने लगी।

मैगेलन ने अब यह समझ लिया कि आगे बढ़ना पागलपन है। उसने महसूस किया कि जाड़े में महासागर में जो भयानक तूफान आते हैं वे सब उन्हीं के शिकार होकर रह जाएँगे। पाँचों जहाज वायु से सुरक्षित, संसार की एक सब से निर्जन और भयानक खाड़ी में लंगर डाले खड़े थे। समुद्र की काली और ठण्डी लहरें जहाज़ों से टकरा रहीं थीं। निर्जन तथा सूने किनारे पर न तो कोई वृक्ष था न झाड़ियाँ थीं। और तो और भयानक जाड़े के चिन्ह देखकर चिड़ियाँ तक भी कहीं दूर उड़ गईं थीं।

सभी नाविकों में उदासी छाई हुई थी – एडमिरल ने राशन की मात्रा में कमी करने की आज्ञा दी। इससे लोगों में गुस्से की लहर दौड़ गई। मैगेलन को भय था कि आगे की यात्रा के लिए खाने-पीने की सामग्री कम पड़ सकती है।

असन्तुष्ट स्पेनी कप्तानों ने मौका हाथ से न जाने दिया। उन्होंने गुस्से में आए हुए नाविकों को भड़काया और बगावत करवा दी। मैगेलन ने इस बगावत को दबाया और भड़कानेवालों को कड़ी सज़ा दी। इसके बाद किसी को मैगेलन के विरुद्ध कुछ भी कहने की हिम्मत न हुई। परन्तु स्पेनी अफसरों के दिल में दुश्मनी की आग भड़कती रही।

इन लोगों ने जैसे-तैसे भयानक जाड़े के पाँच महीने काटे। जाड़े का अन्त हुआ तो सभी जहाज़ उस रहस्यपूर्ण जलडमरूमध्य का पता लगाने के लिए फिर से दक्षिण दिशा में चल पड़े।

नित नई मुसीबतें आती रहीं। अन्वेषण के समय उनके जहाज़ों में सबसे द्रुतगामी जहाज़ 'सान्टियागो' नष्ट हो गया। तूफान ने उसे किनारे पर ले जा पटका और चकनाचूर कर डाला। परन्तु नाविकों की टोली जैसे-तैसे बच निकली। इस टोली को

दूसरे जहाज़ों में स्थान दिया गया और फिर सभी आगे बढ़े।

आखिर मैगेलन का सपना साकार हुआ। विजय का चिरवांछित दिन आया! नाविकों ने उस अमेरिका महाद्वीप में ऊँचे अन्तरीप के पीछे काफी दूर तक फैली हुई भयानक खाड़ी देखी। खाड़ी का जल तेज हवा के कारण काली-काली लहरों की शक्ल में तेजी से हिलोरें ले रहा था।

मैगेलन ने अन्वेषण के लिए दो जहाज़ भेजे। उनके जहाज़ी कुछ दिनों बाद तोपें दनदनाते, झण्डे फहराते और खुशी से दीवाने होते तथा शोरगुल मचाते हुए लौटे। वह महान खोज पूरी हुई।। रहस्यपूर्ण जलडलरूमध्य का पता चल गया।

मैगेलन की खुशी का ठिकाना न रहा। बाद में इस प्रसिद्ध समुद्री नाविक के नाम पर इसे 'मैगेलन जलडमरूमध्य' का नाम दिया गया। दक्षिणी अमेरिका के मानचित्रों में तुम्हें इसका यही नाम मिलेगा।

मैगेलन का जहाज़ी बेड़ा पूरे एक महीने तक उस नए खोजे हुए जलडमरूमध्य में आगे बढ़ता रहा। अन्त में उनको अनजाने और नए महासागर में एक रास्ता दिखाई पड़ा। मैगेलन की आँखों में खुशी के आँसू छलक आए।

मैगेलन ने सोचा अब तो पश्चिम की ओर– मनचाहे 'मसालों के द्वीपों' की ओर – जल्दी-जल्दी बढ़ना चाहिए।

सफलता की ड्योढ़ी पर इस साहसी नाविक को नई विपत्ति का सामना करना पड़ा। 'सान-एन्टोनियो' जहाज़ के कप्तान के सहायक ने बगावत कर दी और चुपके-चुपके अपने जहाज़ को स्पेन वापस भगा ले गया।

'सान-एन्टोनियो' जहाज़ पर ही खाद्य-सामग्री का मुख्य व सबसे अच्छा भण्डार था। यह सबसे लम्बा-चौड़ा जहाज़ था और एडमिरल ने उसके भण्डार को ज़रूरत के वक्त के लिए सुरक्षित रख छोड़ा था।

मैगेलन के पास अब केवल तीन जहाज़ और बहुत थोड़ा राशन-पानी रह गया था। किन्तु उसने दृढ़ता से कहा, ''हम लौटेंगे नहीं, आगे ही बढ़ेंगे, चाहे हमें जहाज़ों पर लगी चमड़े की रस्सियाँ ही क्यों न चूसनी पड़े।''

28 नवम्बर 1520 में मैगेलन का जहाज़ी बेड़ा अपार-असीम महासागर में चल पड़ा। इससे पहले किसी यूरोपीय जहाज़ ने यह महासागर पार नहीं किया था।

मैगेलन के बेड़े के जहाज़ जीर्ण-शीर्ण हो चुके थे। उनके मस्तूल ढीले पड़ चुके थे और पाल फट गए थे। यदि उसे अपने सामने दिखाई देनेवाले सागर के विस्तार का ज्ञान होता तो शायद वह ऐसी खतरनाक यात्रा का निश्चय ही न करता। किन्तु उसे तो यह सब मालूम ही न था।

मैगेलन की यात्रा के पहले, लोग यह नहीं जानते थे कि पृथ्वी का आकार कितना बड़ा है। एडमिरल ने सोचा कि मोलुक्का द्वीप समूह तक उसे लम्बी यात्रा नहीं करनी पड़ेगी। वर्तमान पैमाने के अनुसार शायद 3,000–4,000 किलोमीटर तक ही। परन्तु सचमुच में यह रास्ता लगभग 18,000 किलोमीटर लम्बा था।

नए महासागर में नाविकों को अनुकूल तथा सुन्दर मौसम मिला। उनके ऊपर निर्मल तथा सुहावना आकाश फैला था। लम्बे जाड़े में ठिठुरे हुए इन लोगों को सूर्य की किरणें गर्मी दे रही थीं। मन्द-मन्द वायु जहाज़ों को पश्चिम दिशा में लिए जा रही थी। मैगेलन ने इस नए महासागर का नाम 'प्रशान्त महासागर' रखा।

बाद में मालूम पड़ा कि यह महासागर उतना शान्त नहीं है। उसके विशाल विस्तार के कारण उसे 'विशाल' कहा गया। अतएव, बहुत मानचित्रों में इसे 'विशाल या प्रशान्त महासागर' का नाम दिया जाता है।

कई सप्ताह बीत गए, पर किनारा कहीं दिखाई न दिया। एक महीना बीता, दूसरा भी बीत गया, किन्तु तीनों छोटे जहाज़ों के चारों ओर पहले की भाँति विशाल महासागर ही दिखाई देता रहा।

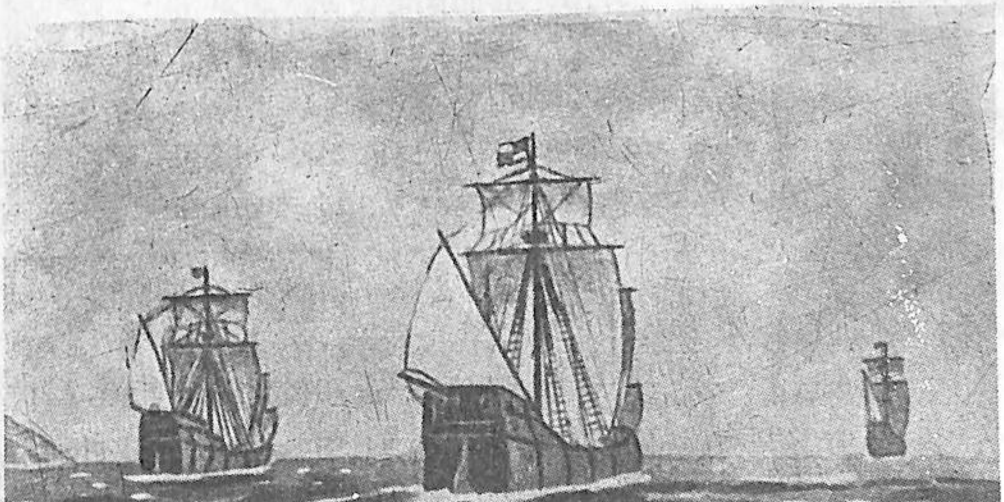
जहाज़ों पर अब भुखमरी शुरू हुई। सफ़र शुरू करने से पहले मैगेलन ने सुखाई हुई पाव रोटी के बहुत से बक्से रास्ते के लिए जमा किए थे। अब पता चला कि उसके दुश्मनों ने इस मामले में भी छल किया है। उन्होंने इन बक्सों में गली-सड़ी और बेकार की चीज़ें भर दीं थीं। इतना ही नहीं, चूहों ने बक्से काट डाले थे और वे उनके अन्दर की वस्तुएँ भी हड़पते जाते थे। नाविकों ने बेरहमी से चूहों का शिकार करना शुरू किया। पकड़े गए चूहे मिठाइयों के बराबर समझे जाते थे। उन्हें बड़े चाव से खाया जाता था।

शराब बहुत पहले ही खत्म हो चुकी थी। पीपों में रखा हुआ मीठा पानी सड़ चुका था। उसमें से बहुत बुरी सड़ांध आती थी। लोग अपनी नाक दबाकर बड़ी मुश्किल से और नफ़रत करते हुए यह पानी पीते थे।

अन्त में मैगेलन की मनहूस भविष्यवाणी भी सच निकली – नाविकों को चमड़े की रस्सियाँ भी खानी पड़ीं। वे इन रस्सियों को नर्म करने के लिए कुछ दिन तक समुद्र के पानी में लटकाए रखते। फिर उन्हें टुकड़ों में काटते, भूनते और चबाए बिना ही निगल जाते। उन्हें चबाना तो सम्भव ही न था। चमड़े के इन निगले हुए टुकड़ों के कारण सभी के पेट में असह्य दर्द होने लगा।

यात्रा का तीसरा महीना भी समाप्त होने को आया। नाविक भूखे मर रहे थे। मृतकों को जहाज़ों से नीचे फेंक दिया जाता था और उन्हें शार्क मछलियाँ खा जाती थीं।

लोगों के मन पर बुरी तरह आतंक छाया था। इन्हें महसूस होने लगा था कि इस भयानक महासागर में ही उनका अन्त निश्चित है। नाविक सोचते थे कि अब उन्हें ज़मीन कभी दिखाई न देगी।



किन्तु मैगेलन ने यह भी अनुभव किया कि वापस लौटना भी तो सम्भव नहीं है। आगे बढ़ते जाने पर, जल्द या देर से, द्वीप जरूर मिलेंगे। लेकिन जहाँ तक वापस लौटने की बात है, तो वे लौट कभी न सकेंगे, क्योंकि इसके लिए उनके पास न तो

शक्ति रह गई थी और न खाद्य सामग्री।

तीन महीनों से अधिक की लम्बी और भयानक यात्रा के बाद ही नाविकों को ज़मीन दिखाई दी। ज़मीन भी ऐसी कि जहाँ न एक बूँद पानी था और न कोई पेड़-पौधा ही। वहाँ था सिर्फ वीराना और मटमैली चट्टानें। इन लोगों ने फिर भी अपनी हिम्मत बनाए रखी। उन्हें लगा कि इस विस्तृत महासागर का अब जल्दी ही अन्त हो जाएगा और बहुत सम्भव है कि उन्हें हरे-भरे द्वीप भी दिखाई दें। ऐसे द्वीप जहाँ पानी और खाने की चीज़ें भी हों। आख़िर उन्हें इन्तज़ार और सब्र का मीठा फल मिला।

6 मार्च, 1521 को आनन्द विभोर नाविकों ने एक द्वीप देखा – असली द्वीप, जिसमें ताड़ के वृक्ष थे और थीं मीठे जल की छोटी-छोटी नदियाँ। इन्हीं नदियों के स्वच्छ और शीतल जल के लिए तो ये बेचारे कब से तरस रहे थे। इस द्वीप पर बस्ती थी और लोगों के पास मवेशी भी थे। खाने के लिए ताज़ा माँस भी मिल सकता था। आख़िर साहसी नाविकों ने राहत की साँस ली...।

अब तुम शायद यह सोचोगे कि चलो किस्सा ख़त्म हुआ। इसके बाद तो मैगेलन को कुछ भी



एडमिरल (नौसेनापति) फेरनान मैगेलन

तकलीफ नहीं उठानी पड़ी होगी। वह बड़े मज़े से एक द्वीप से दूसरे द्वीप में गया होगा और कई बन्दरगाहों का चक्कर काटकर अपने तीनों जहाज़ों के साथ वापस स्पेन लौट आया होगा।

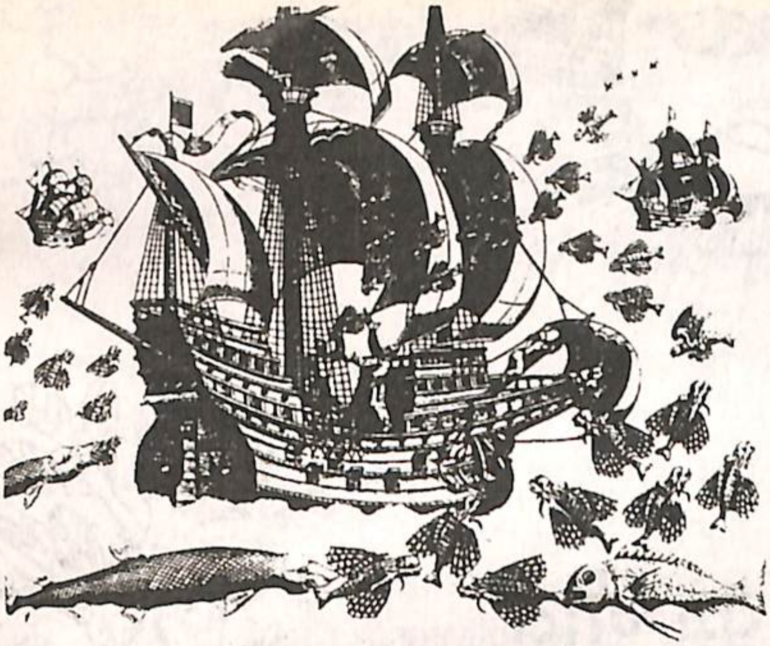
किन्तु नहीं, हुआ सब कुछ इसके विपरीत ही। मैगेलन ने फिलिपाइन द्वीपसमूह के छोटे-छोटे राजाओं के आपसी झगड़ों में हस्तक्षेप किया। उसने उन लोगों को यूरोपीय शस्त्रों का बल दिखाकर डराना-धमकाना चाहा। मैगेलन ने कवचों से सुसज्जित साठ योद्धाओं के साथ मतान द्वीप के हज़ार आदिवासियों से मोर्चा लिया। ये आदिवासी केवल तीर, कमान और बर्छी-भालों से ही लड़ रहे थे। मैगेलन इसी युद्ध में काम आया।

इस प्रकार यह विख्यात समुद्री नाविक अपने जीवन का महान कार्य पूरा किए बिना ही चल बसा।

बचे हुए स्पेनी नाविक एशिया और ऑस्ट्रेलिया के बीच के समुद्र में फैले हुए द्वीपों में काफी अर्से तक भटकते रहे। अब उनके पास केवल दो जहाज़ 'विक्टोरिया' व ट्रीनीडाड' ही बचे रह गए थे। टूटे-फूटे 'कन्सेप्शियन' को उन्हें जला देना पड़ा। परन्तु बाद में उन्हें एहसास हुआ कि 'ट्रीनीडाड' भी बुरी तरह जर्जर हो चुका है और यूरोप के लम्बे सफर के लिए बहुत दिनों तक नहीं टिक सकेगा।

अतएव उन लोगों ने 'ट्रीनीडाड' को मरम्मत के लिए छोड़ देने का निश्चय किया। अब कप्तान सेबास्तियन डेल कानो की कमान में सैंतालीस नाविक 'विक्टोरिया' जहाज़ में स्पेन की तरफ रवाना हुए।

यहाँ हम यह भी बतला देना चाहते हैं कि 'ट्रीनीडाड' कभी भी अपने देश वापस न पहुँच सका। वहीं द्वीपसमूह में काफी समय तक भटकने के बाद वह जहाज़ लगभग अपने पूरे दल के साथ नष्ट हो गया और अन्त में केवल चार ही आदमी



मैगेलन के साथ यात्रा पर आए लोगों में से कुछ ही वापस लौट सके थे। इनके द्वारा सुनाए गए यात्रा के किस्सों में से एक पर किसी यूरोपीय कलाकार द्वारा बनाया गया काल्पनिक चित्र।

स्पेन लौट सके।

'विक्टोरिया' में काफी खाद्य-सामग्री और काफी मात्रा में मीठा जल जुटाया गया। फिर यह जहाज़ अपने देश के लिए, अपनी आख़िरी मंज़िल के लिए रवाना हुआ।

यह यात्रा बहुत ही भयानक सिद्ध हुई। खाद्य-सामग्रियाँ ख़राब हो गईं और पानी सड़ गया। जहाज़ पर 26 टन मसाले थे, उस समय के अनुसार उनका मूल्य बहुत ही अधिक था। स्पेनियों ने ये मसाले पूर्वी समुद्रों के द्वीपों में वस्तुओं की अदला-बदली करके प्राप्त किए थे। परन्तु मसाले ज्यों के त्यों तो खाए नहीं जा सकते। उन्हें तो खाने-पीने की चीज़ों में ही मिलाया जा सकता है। पर इनके पास खाद्य-सामग्री ही कहाँ थी?

'विक्टोरिया' अपने देश के सेवील्या नामक बन्दरगाह में, 8 सितम्बर 1522 को वापस पहुँचा। उसके डेक पर लहराते हुए स्पेनी झण्डे के नीचे केवल अठारह लोग ही खड़े थे। यह पहला संसार-भ्रमण बारह दिन कम, तीन वर्षों तक जारी रहा।

स्पेनी सौदागर तो बहुत ही खुश हुए। खुश होते भी क्यों न? यह जहाज़ 26 टन मसाले जो लाया था। उन्हें उन पाँचों जहाज़ों की कीमत और यात्रा के सारे खर्च से अधिक रकम इन मसालों से वसूल हुई।

यह सच है कि इस यात्रा में एक सौ साठ से अधिक नाविक तथा अफसर मरे, पर सौदागरों को इससे क्या? उन्हें इसका ज़रा भी दुख न हुआ। उन्हें तो उनके लिए एक पाई भी खर्च नहीं करनी पड़ी थी।

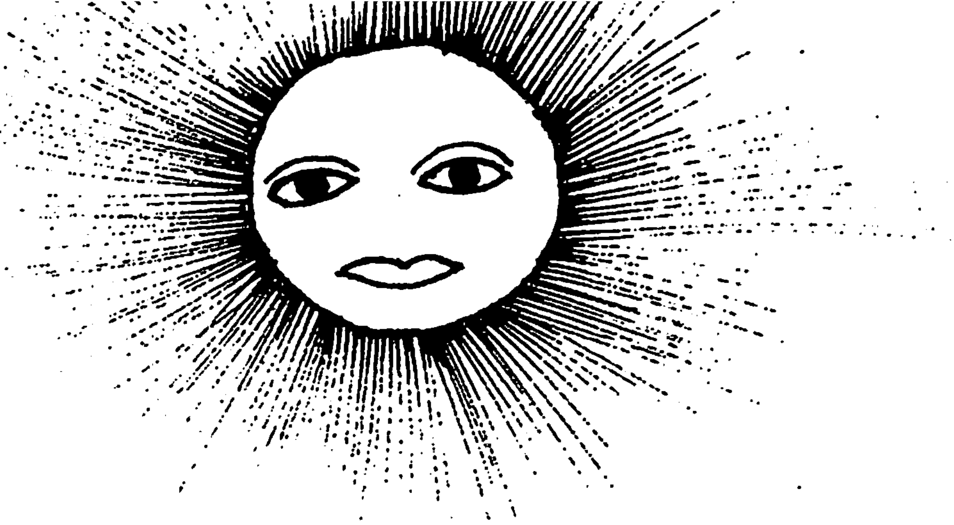
इस प्रकार मैगेलन की यह विख्यात यात्रा समाप्त हुई।

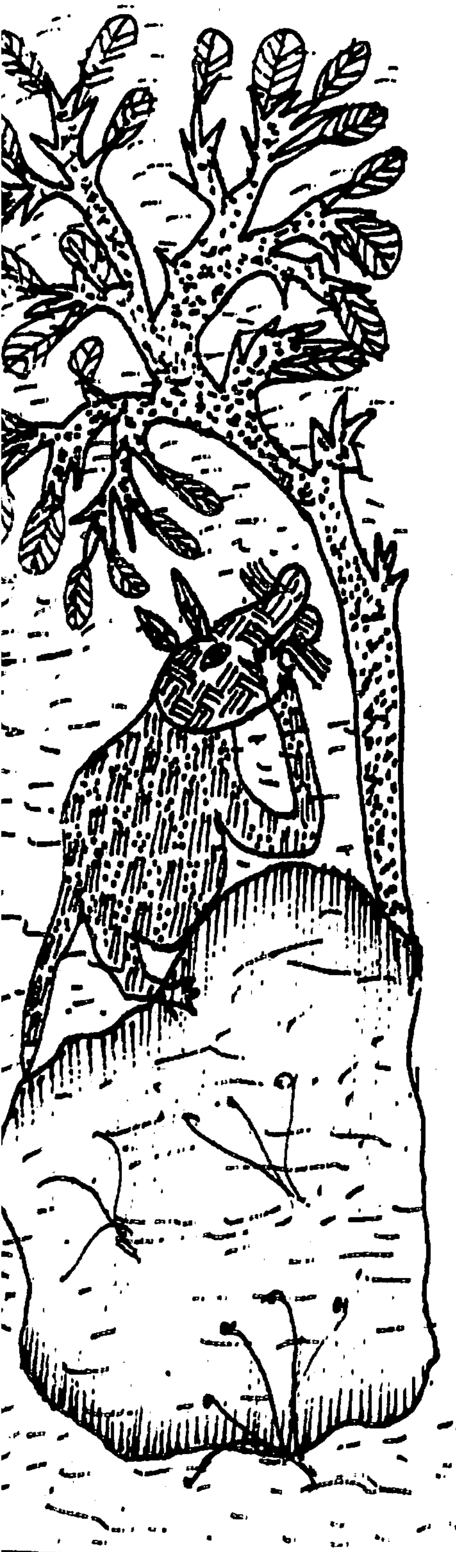
पहली बार स्पष्ट रूप से यह सिद्ध हुआ कि पृथ्वी गोल है और इसके चारों ओर चक्कर काटा जा सकता है।

हमारे लिए इसकी कल्पना तक करना कठिन है कि मैगेलन के समकालीन लोगों पर इस आश्चर्यजनक खोज का कितना महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा होगा।

संसार के मानचित्र पर ज़रा नज़र डालो। यूरोप-निवासी, कोलम्बस के पहले विशाल अमेरिकी महाद्वीप के अस्तित्व के विषय में नहीं जानते थे। और मैगेलान के समय तक वे प्रशान्त महासागर के असली विस्तार की कल्पना नहीं कर सके थे। मानचित्र से अमेरिका और प्रशान्त महासागर को हटा दो। अब देखो क्या पृथ्वी बहुत बड़ी रह गई? लगभग 450 वर्ष पूर्व कोलम्बस व मैगेलान की विख्यात यात्राओं के पहले लोग पृथ्वी को ऐसा ही समझते थे।

● यह लेख और इसके चित्र 'धरती और आकाश' और 'डिस्कवरी एंड एक्सप्लोरेशन' से साभार





लू का गीत

खिसियानी बिल्ली-सी लू
नोच रही हर खम्भा तू
आखिर क्यों नाराज़ बता?

खिड़की दरवाज़े भड़भड़!
हरर-सरर, फड़फड़, खड़खड़!
शोर मचा के नहीं सता!

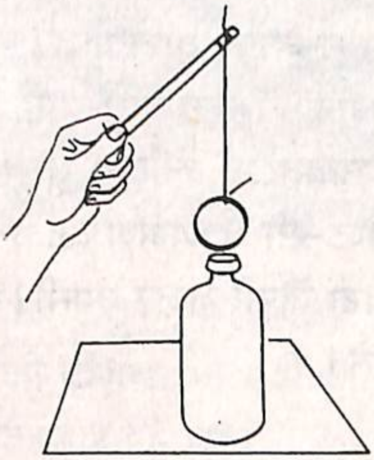
सर्दी में, बरसातों में,
रहो कहाँ तुम रातों में?
देना अपना हमें पता!



● डॉ. हरीश निगम
● चित्र: परसाद सिंग कुशराम

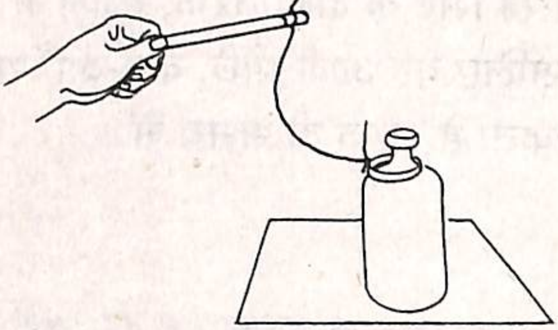


छल्ला पिरोना



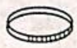
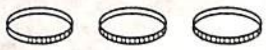
गर्मी की छुट्टियों में दोपहर में घर पर ही बैठकर खेल सकने वाले कई खेल तुम्हें आते होंगे।

चलो एक आसान -सा खेल हम भी बताते हैं। खेल शुरू करने से पहले एक काँच की बोतल, लगभग दो-तीन फुट लम्बी रस्सी, इस बोतल के मुँह से थोड़ा बड़ा छल्ला (चाहो तो छल्ला तार को मोड़कर भी बना सकते हो या टायर या ट्यूब को काटकर भी तैयार कर सकते हो) और एक पेंसिल इकट्ठा कर लो। छल्ला ऐसा बनाना कि वह हमेशा पूरा गोल ही रहे। सिमटकर पिचकी हुई स्थिति में न आ जाए। इनके अलावा एक कॉपी और पेन या पेंसिल भी साथ रख लो, इस खेल का स्कोर लिखने के लिए।



अब छल्ले को रस्सी के एक सिरे से बाँध लो और पेंसिल को दूसरे सिरे से। खेल यह है कि एक पारी में कोई कितनी बार बोतल के मुँह में छल्ला पिरो सकता है।

एक पारी में चाहो तो पाँच मौके दो या दस मौके। और इन पाँच या दस मौकों में, यानी एक पारी में खिलाड़ी कितनी बार बोतल के मुँह में छल्ला फँसा पाता है। यह उसका एक पारी का स्कोर होगा।

खिलाड़ी	एक पारी का स्कोर = एक बार छल्ला पिरोया
मुन्नी	
सरोज	
हेमराज	
नीलू	

कॉपी में स्कोर कार्ड बनाने के लिए वैसी तालिका बना लो जैसी चित्र में दिखाई है। एक तरफ सभी खिलाड़ियों के नाम लिख लो। दूसरी तरफ उसने जितनी बार बोतल के मुँह में छल्ले फँसाए हों उतने छल्लों का चित्र बना दो। स्कोर कार्ड तुम और भी कई तरीकों से बना सकते हो। सोचो कैसे? जो खिलाड़ी सबसे ज़्यादा स्कोर करेगा। वही जीतेगा। और अगली बार वह किसी नए तरीके से स्कोर कार्ड भी बना सकता है।

क्या देखते हो ....

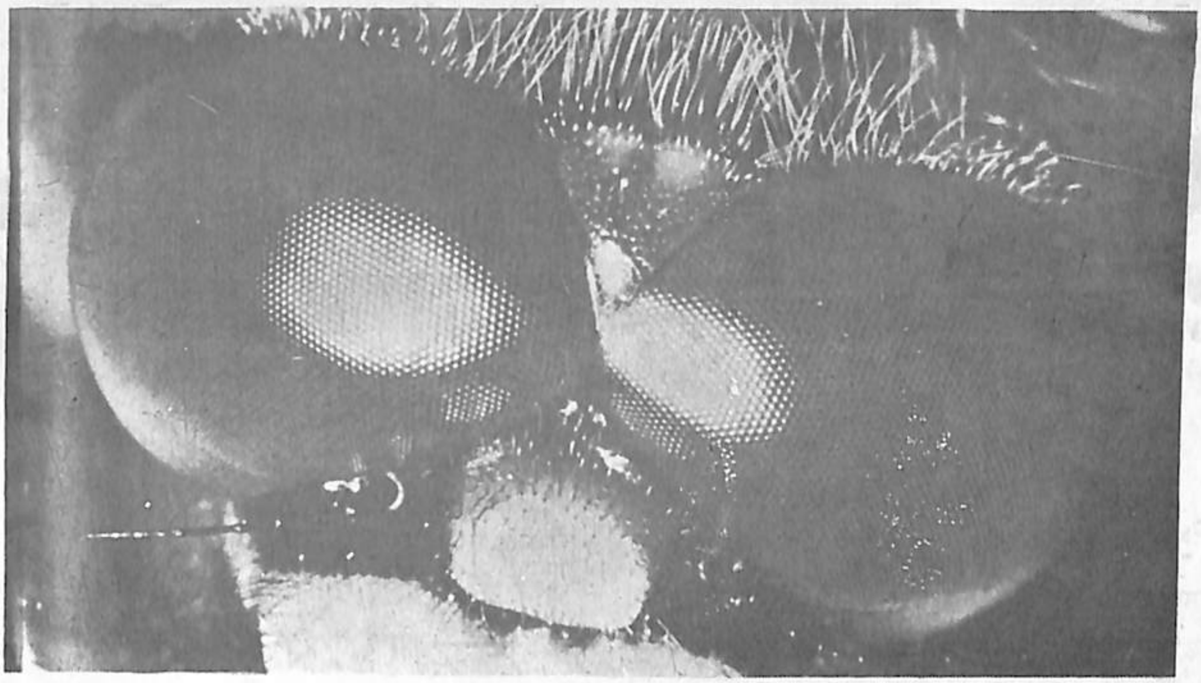


यदि तुम खरगोश होते तो हरे-भरे घास के मैदान में नरम-नरम घास कुतर रहे होते....! और एक ही समय में तुम दाएँ-बाएँ आगे-पीछे सभी तरफ देख सकते....। लेकिन तुम्हें सभी चीज़ें सिर्फ भूरी अस्पष्ट-सी, लगभग ब्लैक एण्ड व्हाइट टी.वी. की तस्वीरों जैसी नज़र आतीं। यानी तुम्हें रंग नहीं दिखते।

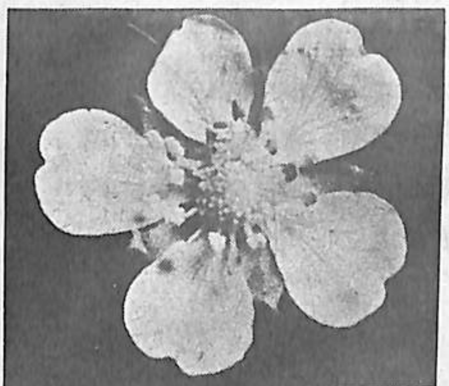
तुमने हिरण को तो देखा ही होगा। उसकी आँखें सिर के दोनों तरफ, बगल में होती हैं। इसलिए वह आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ सब तरफ देख सकता है.. एक ही समय में।



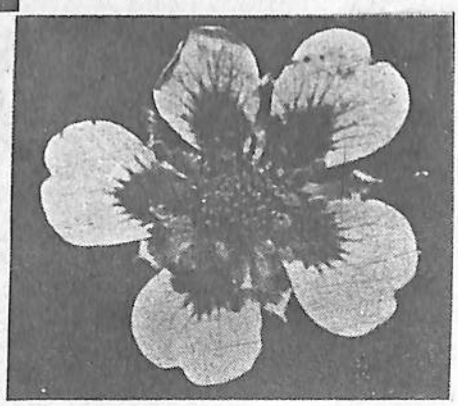
और यदि तुम बाज़ होते तो... तो तुम रंग देख सकते... बिल्कुल हमारी तरह, इन्सान की तरह...। इसके साथ ही तुम्हारी आँखें बिल्लौरी काँच (इससे वस्तुएँ कई गुना बड़ी दिखती हैं) की तरह भी काम करतीं। जानते हो! बाज़ आकाश में एक हज़ार फीट की ऊँचाई पर उड़ते हुए भी घास में घूम रहे एक छोटे से चूहे तक को देख सकता है।



और भी विचित्र और मनोरंजक लगता अगर तुम मधुमक्खी की आँखों से देखते। तब तुम्हें सुर्ख फूलों की बगिया भी बड़ी-सी काली परछाई जैसी लगती। और पीली गुलबहार का फूल ....! तुम्हें पीली गुलबहार के बीच में पराबैंगनी रंग के चमकीले चकत्ते भी दिखते। इन्हें मधुमक्खी देख सकती है, मगर हम नहीं देख सकते।



यह दोनों एक ही फूल के चित्र हैं। ⬅ ऊपर वाला चित्र एक साधारण कैमरे से खींचा गया है और वैसा ही दिखता है जैसा हमारी आँखों से। ⬇ नीचे वाला चित्र एक खास तरह की रोशनी में खींचा गया है। इसमें जो काले धब्बे दिख रहे हैं वो मधुमक्खियों को तो दिखाई देते हैं पर सामान्य स्थिति में हमको नहीं दिखते।



अलग-अलग तरह के जानवरों को वस्तुएँ हमसे बिल्कुल अलग तरह से दिखती हैं। कई ऐसी चीज़ें भी वे देख सकते हैं जिन्हें हम नहीं देख सकते।

है न मज़ेदार! लेकिन यह उतना ही ज़रुरी है प्राणियों को अपने जीवन के लिए।



इस बार

एथलेटिक्स



एथलेटिक्स में इस बार हम जिन प्रतियोगिताओं के बारे में बात करेंगे वे हैं गोला फेंक, भाला फेंक, चक्का फेंक और तारगोला फेंक। इनमें से कुछ तो तुम्हारे स्कूल के खेलों में शामिल होती ही होंगी।

तुमने नदी के किनारे पत्थर को दूर तक फेंकने की होड़ तो कई बार लगाई होगी। यदि पत्थर फेंकने को कुछ नियमों में बाँध दिया जाए तो यही गोलाफेंक प्रतियोगिता बन जाएगी। जैसे, एक निश्चित आकार के घेरे में खड़े होकर यदि पत्थर की जगह तुम सात किलो वजनी गोला फेंको, ।पत्थर तो तुम किसी भी तरीके से फेंकते हो, कभी हाथ पीछे से लाते हुए, तो कभी झुलाकर झटके से। मगर गोला फेंकते समय एक तो हाथ कंधे के पीछे नहीं ले जा सकते। दूसरे इसे फेंकते समय तुम्हारा वह हाथ जिससे तुम गोला पकड़ोगे, कंधे पर हो और गोला तुम्हारी ठोड़ी को छू रहा हो।

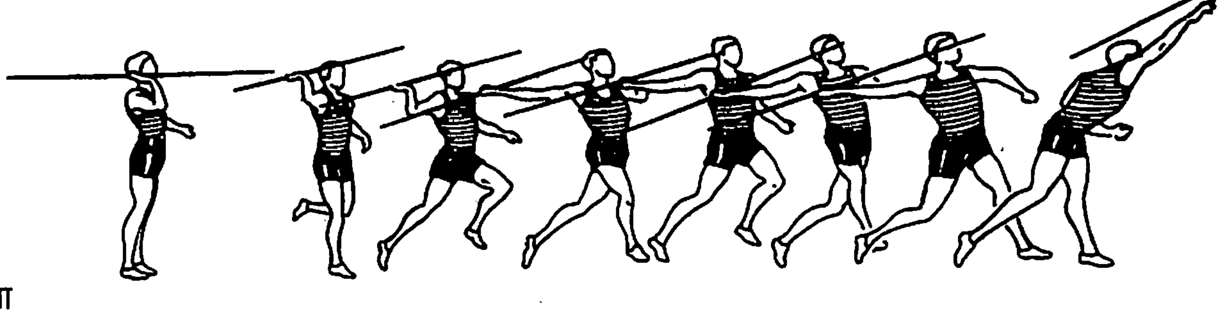
पुरुषों की प्रतियोगिता के लिए गोले का वजन 7.26 कि.ग्रा. और महिलाओं की प्रतियोगिताओं के लिए 4 कि.ग्रा. होता है। फील्ड यानी घेरा और उसके सामने का मैदान भी एक निश्चित माप का होता है। जिस घेरे से गोला फेंकते हैं वह साढ़े तीन मीटर त्रिज्या का होता है। यानी इसका पूरा घेरा (परिधि) 22 मीटर का होता है। इस घेरे के केन्द्र से फील्ड की ओर 2.75 मीटर लम्बा चाप बनाया जाता है। इस चाप रेखा के दोनों सिरों को यदि इस घेरे के केन्द्र बिन्दु से दो रेखाएँ खींचकर मिला दें और फिर इसी अनुपात में इन दो रेखाओं को आगे की ओर मीटरों लम्बा कर दें, तो यही हो जाएगा गोलाफेंक प्रतियोगिता का फील्ड या मैदान।

घेरे के इसी 2.75 मीटर हिस्से या चाप पर एक 4 इंच ऊँचा स्टॉप बोर्ड लगा होता है। अगर गोला फेंकते समय एथलीट के शरीर का कोई भी हिस्सा इस स्टॉप बोर्ड को छू जाए, तो गया थ्रो पानी में। यानी यह गलत थ्रो माना जाता है।

एथलीट का थ्रो सही था या गलत, यह बताने के लिए मैदान में एक व्यक्ति होता है। यदि थ्रो सही है तो वह सफेद झंडा दिखाता है और यदि थ्रो गलत होता है तो वह लाल झंडा दिखाता है।

ओलम्पिक या एशियाड जैसी बड़ी प्रतियोगिताओं में गोला फेंक में कई एथलीट भाग लेते हैं। इसलिए इनमें पहले एक छँटाई का दौर चलता है। इस दौर में हर एथलीट को 3–3 मौके मिलते हैं। फिर दूसरे दौर यानी फाइनल दौर के लिए इनमें से चुने जाते हैं सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले आठ खिलाड़ी। इन आठों खिलाड़ियों को दोबारा 3–3 मौके दिए जाते हैं। यदि किसी प्रतियोगिता में खिलाड़ियों की संख्या आठ या आठ से कम है, तो हरेक को आठ–आठ मौके दिए जाते हैं। इस दौर के प्रदर्शन के आधार पर चुने जाते हैं तीन सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी जिन्हें स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक मिलता है।





एथलेटिक्स में इसी तरह की दूसरी प्रतियोगिता होती है भाला फेंक। भाला तो तुमने देखा ही होगा। इस भाले को नियमों का पालन करते हुए इस तरह से फेंकना होता है कि भाला ज़मीन पर नोंक की तरफ से गिरे। भले ही भाले की नोंक ज़मीन में अन्दर धँसे या नहीं। पुरुषों की प्रतियोगिताओं के लिए 800 ग्राम का भाला और महिलाओं की प्रतियोगिताओं के लिए 600 ग्राम वाला भाला होता है। भाले के बीचोंबीच धागे के लपेटों से पकड़ बनाई जाती है जिससे एथलीट अच्छी तरह से भाले को पकड़कर फेंक सके। प्रतियोगिता में, पुरुषों के लिए भाले की लम्बाई 2.6 मीटर से 2.7 मीटर और महिलाओं के लिए भाले की लम्बाई 2.2 मीटर से 2.3 मीटर होती है।

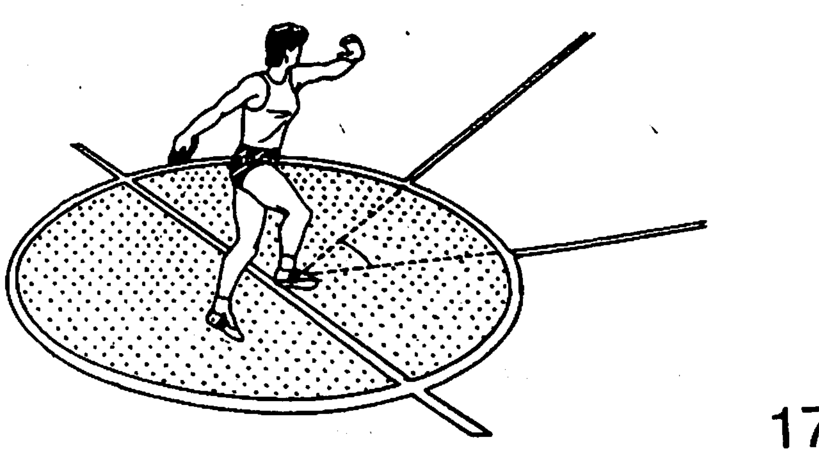
भाला फेंक प्रतियोगिता के लिए भी एक निश्चित नाप-जोख वाला मैदान होता है। इस मैदान से पहले एक 26 फुट लम्बी और 4 मीटर 3 फुट चौड़ी पट्टी होती है, जिस पर दौड़ते हुए एथलीट भाला फेंकता है। इस पट्टी और मैदान को अलग करने वाली रेखा पर एक लकड़ी या धातु की सफेद रंग की चाप लगी होती है। यह चाप गोला-फेंक प्रतियोगिता के स्टॉप बोर्ड की तरह ही सीमा रेखा का काम करती है। यदि कोई एथलीट भाला फेंकते समय इसे छू लेता है तो उसका थ्रो गलत माना जाता है।

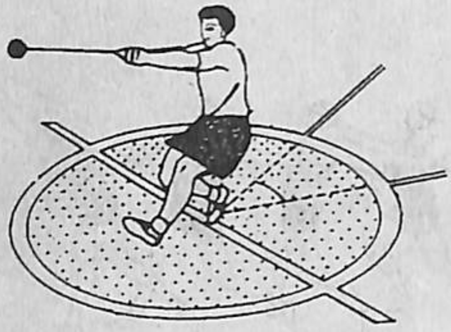
भाला फेंक प्रतियोगिता तुमने अपने टेलीविज़न पर देखी होगी। इसको फेंकने का एक अलग ढंग होता है। प्रतियोगिताओं में भी एथलीट को इसी तरीके से भाला फेंकना ज़रूरी होता है। यानी भाला कंधे और भाला फेंकने वाली बाजू के ऊपर से ही फेंका जाना चाहिए। इसमें भी गोला-फेंक प्रतियोगिता की तरह छँटाई दौर और फायनल दौर होता है और इसके बाद चुने जाते हैं तीन सर्वश्रेष्ठ भाला-फेंक एथलीट।

इसी तरह की तीसरी प्रतियोगिता है चक्का फेंक। तुमने बढ़ई की फीता रखने की चकती तो देखी ही होगी। इससे ही मिलता जुलता होता है चक्का। पुरानी टूटे फीते वाली चकती या इसी आकार का लकड़ी का चक्का बनवाकर तुम अभ्यास भी कर सकते हो।

चलो अब चक्के के बारे में जानते हैं। यह चक्का लकड़ी का बना होता है। इसके बीच में एक वज़न लगा दिया जाता है जिससे यह प्रतियोगिता में निर्धारित वज़न के बराबर हो जाएं। पुरुषों की प्रतियोगिताओं के लिए चक्के का वजन दो किलो और महिलाओं की प्रतियोगिताओं के लिए एक किलो होता है। पुरुषों की प्रतियोगिता के लिए लगभग 4.1 इंच त्रिज्या का चक्का होता है जबकि महिलाओं की प्रतियोगिताओं के लिए लगभग 3.6 इंच त्रिज्या वाला चक्का होता है।

यह चक्का 4 फुट 1 इंच की त्रिज्या वाले घेरे से फेंका जाता है। इसका मैदान भी गोला फेंक प्रतियोगिता के मैदान जैसा ही होता है। बस, गोला फेंक प्रतियोगिता में घेरे के 2.75 मीटर लम्बे चाप के दोनों सिरों को केन्द्र से मिलाते हुए आगे बढ़ाते हैं। जबकि इसमें घेरे के 34.36 इंच लम्बे चाप के सिरों को केन्द्र से मिलाते हैं।





और फिर इसी अनुपात में मैदान की ओर चाप के दोनों सिरे बढ़ाते हैं।

चाप के हिस्से को छोड़कर बाकी के पूरे घेरे में एक 11 फुट ऊँची जाली लगी होती है जिससे थ्रो करते समय यदि चक्का छूट भी जाए तो जाली उसे रोक सके। हाँ, इस प्रतियोगिता में एथलीट किसी भी तकनीक से चक्का फेंक सकता है। बस चक्का पकड़ते समय हथेली की सभी उँगलियाँ एक-दूसरे से जुड़ी न हों। फिर चाहे एथलीट चक्का झुककर फेंके, पत्थर की तरह पकड़कर या फिर गोल-गोल घूमकर।

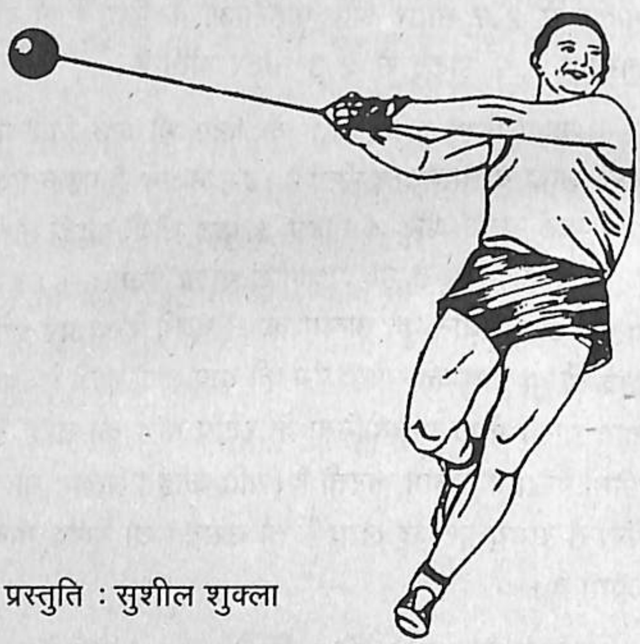
चक्का फेंकते समय न तो एथलीट का पैर घेरे की रेखा को छूना चाहिए। न ही फेंकने के बाद एथलीट आगे की ओर, यानी घेरा पार कर जा सकता है। इन दोनों स्थितियों में थ्रो गलत माना जाएगा। चक्का फेंक प्रतियोगिता में एथलीटों का छँटाई और फाइनल दौर, गोला फेंक और भाला फेंक प्रतियोगिताओं की तरह ही होता है।

इस तरह की चौथी प्रतियोगिता है तार गोला फेंक या हेमर थ्रो। जैसा कि इसके नाम से ही पता चलता है, इसमें एक तार बँधा गोला होता है। गोला साढ़े चार से साढ़े पाँच इंच व्यास का होता है। इसका वज़न लगभग 7.250 कि.ग्रा. होता है। इस गोले को एक 3 मि.मी. व्यास के लगभग 3 फुट 6 इंच लम्बे तार से जोड़ा जाता है। इस तरह तार गोले की कुल लम्बाई लगभग 3 फुट 11 इंच होती है। इस तार पर अच्छी पकड़ के लिए इससे एक छल्ला जुड़ा होता है।

तार गोला फेंक प्रतियोगिता का मैदान बिल्कुल गोला फेंक प्रतियोगिता के मैदान जैसा होता है। बस इसमें स्टॉपबोर्ड नहीं लगा होता है। इसके घेरे में चक्का प्रतियोगिता के घेरे की तरह ही 11 फुट ऊँची जाली लगी होती है। एथलीटों का चयन पहले की प्रतियोगिताओं जैसा ही होता है।

यहाँ तुम्हें इन चारों प्रतियोगिताओं के अब तक के सबसे अच्छे प्रदर्शन की जानकारी भी दे रहे हैं। ज़रा नापकर तो देखना तुम्हारा थ्रो कितना रहा। और अच्छे प्रदर्शन के लिए अभ्यास ज़रूर करना, मगर सँभलकर।

तो अगली बार फिर बात करेंगे तुम्हारे आसपास खेले जाने वाले किसी मनोरंजक खेल के बारे में।



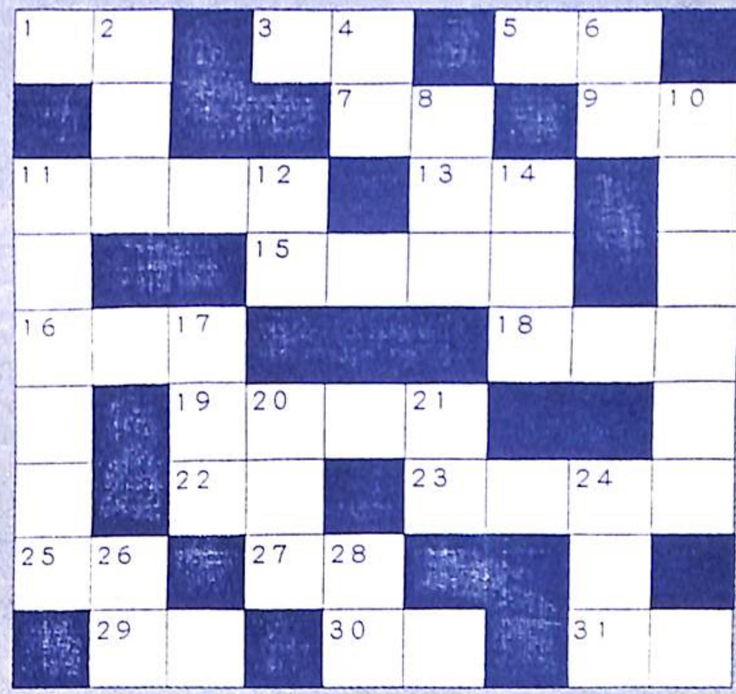
● **प्रस्तुति : सुशील शुक्ला**

ऊपर जिन प्रतियोगिताओं के बारे में तुमने पढ़ा,उनमें विश्वरिकार्ड की जानकारी नीचे दे रहे हैं -

खेल	पुरुषों में	महिलाओं में
चक्का फेंक	74.08 मीटर	76.80 मीटर
भाला फेंक	98.48 मीटर	80.00 मीटर
गोला फेंक	23.12 मीटर	22.63 मीटर
हैमर या तारगोला फेंक	86.74 मीटर	प्रतियोगिता नहीं होती है

वर्ग पहेली - 106

संकेत : बाएँ से दाएँ



1. गिनती की शुरुआत इसी अंक से होती है (2)
3. दलाई लामा में है एक आभूषण (2)
5. एक उपनाम और हवा के बहाव से नाव खेने के लिए बाँधा जाने वाला कपड़ा भी (2)
7. लाठी कठिन में है सही (2)
9. पानी की बूँद गिरने की आवाज़ (2)
11. आजकल दारचीनी में मिलता है एक रुपए का सिक्का (4)
13. यह समुन्दर में मिलता है और कभी-कभी इसमें मोती मिलते हैं (2)
15. वह बर्तन जिसमें फूल सजाए जाते हैं (4)
16. नाव में पाल बाँधने का लट्ठा (3)
18. चिपकाया हुआ (3)
19. नाहक लाला में ढूँढो अटक-अटककर बोलना (4)
22. स्वाद या किसी फल आदि का पनीला हिस्सा (2)
23. दाल और दही से बनने वाला एक पकवान (2,2)
25. जो हजामत बनाता है (2)
27. ईश्वर का एक और नाम (2)
29. चिट्ठी (2)
30. सन् 2001 में शुरू होने वाली है इक्कीसवीं .... (2)
31. गर्मियों का फल और फलों का राजा, खास नहीं....... (2)

संकेत : ऊपर से नीचे

2. भारतीय क्रिकेट टीम का एक भूतपूर्व कप्तानऔर वर्तमान टीम का कोच (3)
4. माला ठीक कहती है में डंडा (2)
6. पलटन के बीच बालों का गुच्छा (2)
8. दासी करे गड़बड़ में कपड़े पर की जाने वाली कढ़ाई (3)
10. .... बिछाना यानी जोरदार स्वागत की तैयारी करना (3,3)
11. आगे बढ़ना या चाल तेज़ करना (3,3)
12. फटे हुए कपड़े को बारीकी से सीकर मरम्मत करना (2)
14. अपन चलें में ढूँढो धनुष की डोरी (3)
17. कल हर में है तरंग (3)
20. चौकस रहने में कमी रह जाना (3)
21. आवाज़ (2)
24. रेत मिला हुआ पत्थर (3)
26. गर्मियों में इसका रस तुम ज़रूर पीते होगे (2)
28. एक सवारी गाड़ी और ......, बहुत हो गया (2)

वर्ग पहेली - 106 का हल चकमक के जुलाई, 2000 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का जुलाई, 2000 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

गर्मी के दिन आए



जमींदार सी गर्मी आई
पेड़-पेड़ से हुई उगाही
पाई-पाई से जुड़ी कमाई
शाख-शाख से जाए
गर्मी के दिन आए

खेतों की सारी हरियाली
काट धूप ने भूस बना ली
गेहूँ, चना, राई के डंठल
सबको यही सुनाएँ
गर्मी के दिन आए

आई जब से गर्म दुपहरी
होने लगी छाँव की चोरी
सिर पर हाथ धरे बैठे हैं
किसको रपट लिखाएँ
गर्मी के दिन आए









घाम ने खींचे कपड़े सारे
ताल-तलैया हुए उघारे
मोती, कबरी जीभ निकारे
दिन-दिन भर सुस्ताएँ
गर्मी के दिन आए

उल्टी गिनती गिनें पहाड़
कब आओगे यार अषाढ़
वर्षा की पहली फुहार को
सब के मन ललचाएँ
गर्मी के दिन आए



● सुशील शुक्ला
● चित्र : दुर्गाबाई

हमारे शिक्षक : 19

अब तक इस शृंखला में कई लोगों ने अपने स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें लिखीं। तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे अपने शिक्षकों के बारे में याद करके कुछ लिखें।



ऐसे थे मेरे गुरुजी

**गुरुजी, गुरुजी भी थे और पालक भी थे।
अनुशासन कठोरता से पालन करवाते
ऊपर से नारियल जैसे कठोर थे और अन्दर से
नारियल की गिरी जैसे नरम थे।**

सन् 1939 की बात है जब हमने विद्यालय जाना शुरू ही किया था। समय से पूर्व पहुँच जाते थे। प्रार्थना में नहीं पहुँचते तो एक घंटे तक खड़े रहने की सज़ा मिलती थी। होमवर्क करके नहीं लाए तो मुर्गा बनने की सज़ा मिलती थी। जब स्कूल छूटता तो गुरूजी मिठास से बुलाते और जो पाठ नहीं आता था वह बैठाकर होमवर्क पूरा करवाते थे। नहीं तो अपने घर बुलवा लेते थे और बगैर ट्यूशन लिए पढ़ा देते थे। हिन्दी, गणित, भूगोल, इतिहास सब विषय एक ही गुरुजी (अध्यापक) पढ़ाते थे। सुन्दर लेखन और शुद्ध लेखन, लकड़ी की मोटी नोक की कलम बनवाकर लिखवाते।

जब हमअच्छा कार्य करते, तो गुरूजी एक चॉक ईनाम में देते थे। तो हम बहुत खुश हो जाते थे। परीक्षाएँ पास आ जातीं तो सभी कमज़ोर बच्चों को घर पर बुलाकर पढ़ाते थे। ट्यूशन कुछ नहीं लेते। गुरुमाता स्नेह से कुछ खाने को भी देती थीं। मेरे गुरुजी सादा जीवन, उच्च विचार के धनी थे। दो-तीन जोड़ धोती-कुरते में पूरा साल निकाल देते थे।

हमारे आचार विचार की लगातार देख-रेख करते रहते थे। और फिर घर पर आकर मेरे पिताजी को सूचना देते रहते थे। कभी हम बीमार हो जाते और विद्यालय नहीं जाते तो हालचाल पूछने घर आ जाते थे। ऐसे नारियल जैसे ऊपर से कठोर और अन्दर से नरम, मुलायम मीठी गिरी से थे मेरे गुरुजी!

● डॉ. रामकुमार फरक्या,
उज्जैन, म.प्र.



● चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

प्यारा कुनबा



निकोलाई नोसोव

अब तक तुमने पढ़ा कि मीश्का हमेशा कुछ नया करना चाहता है। उसे मुर्गी-पालन नाम की एक किताब मिलती है। वह अपने दोस्त कोल्या के साथ इन्क्यूबेटर (मुर्गी के अंडे को सेने वाली मशीन) बनाने की तैयारी करता है। शुरू में मीश्का की माँ उन्हें लैम्प के साथ काम करने की इजाज़त नहीं देती है। पर कोल्या को एक रात यह बात सूझती है कि क्यों न वे बिजली के लैम्प से काम लें। दोनों मिलकर बिजली के लैम्प को आज़माते हैं। फिर अण्डे खरीदने के लिए पैसे जुटाते हैं। अब आगे . .

अगले दिन

जिंदगी भी कैसी अजीब है। कल तक कहीं जाने की बात हमने सपने में भी नहीं सोची थी, और आज ट्रेन में बैठकर नताशा मौसी के गाँव जा रहे थे। हम इन अंडों को जल्दी से जल्दी प्राप्त करके फौरन उन्हें सेना शुरू कर देना चाहते थे। और इधर, यह कमबख्त ट्रेन जैसे हमारा मज़ाक उड़ाती हुई रेंगती जा रही थी। इसलिए हमें लगा कि यात्रा बहुत लम्बी है। यह हमेशा ही की बात है। जब कभी हमें जल्दी होती है। हर बात झूठ-मूठ ही धीरे-धीरे होती है। अलावा इसके, मुझे और मीश्का को यह फिक्र थी कि कहीं ऐसा न हो कि हमारे वहाँ पहुँचने पर नताशा मौसी न मिलें। फिर हम क्या करेंगे?

लेकिन सब ठीक रहा। नताशा मौसी घर पर ही थीं।

हमें देखकर वह बड़ी प्रसन्न हुईं। वह समझीं कि हम उनके साथ रहने के लिए आए हैं।

''हमें बड़ी खुशी होती, लेकिन हम अभी नहीं रह सकते,'' मीश्का ने कहा। ''छुट्टियों के पहले हम ऐसा नहीं कर सकते।''

''हम काम से आए हैं,'' मैंने कहा। ''हमें कुछ अंडे चाहिए।''

''अंडे! क्या बात है, शहर में आजकल अंडे नहीं मिलते?'' मौसी ने पूछा।

''नहीं, मिलते तो हैं,'' मीश्का बोला। ''लेकिन देखिए, हमें ताज़े अंडे चाहिए।''

''क्या दुकानों में ताज़े अंडे नहीं मिलते?''

''अंडे मुर्गी के देते ही सीधे दुकान पर नहीं चले जाते या चले जाते हैं?'' मीश्का ने पूछा।

''हाँ, यह तो सच है, सीधे तो नहीं जाते।''

''हाँ, अब देखिए,'' मीश्का बोल उठा। ''जब तक बहुत-से अंडे नहीं हो जाते, वे इकट्ठा होते रहते हैं और उन्हें दुकान पर जाते-जाते तो शायद पूरा सप्ताह या दो सप्ताह भी लग जाते होंगे।''

''अच्छा, लेकिन इससे क्या?'' नताशा मौसी बोली। ''दो सप्ताह में अंडे ख़राब तो नहीं होते।''

''ओह, यह बात है? लेकिन हमारी किताब में तो यह लिखा है कि दस दिन से ज़्यादा पुराने अंडों को सेना बेकार है।''

''क्या, अंडे सेने हैं! तब तो बात दूसरी है,'' नताशा मौसी ने कहा। ''इसके लिए सचमुच एकदम ताज़ा अंडे ही चाहिए, लेकिन जो अंडे हम 23

खाते हैं, वे एक या दो महीने तक भी खराब नहीं होते। लेकिन तुम्हें क्या मुर्गियाँ पालनी हैं?''

''अरे हाँ, इसीलिए तो हम यहाँ आए हैं,'' मैंने कहा।

''लेकिन अंडे सेओगे कैसे?'' नताशा मौसी ने पूछा। ''इसके लिए तो मुर्गी होना ज़रूरी है।''

''नहीं, हमें मुर्गी की ज़रूरत नहीं है। हमने इसके लिए एक इन्क्युबेटर बना लिया है।''

''क्या, इन्क्युबेटर! भई वाह! लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि इन्क्युबेटर से तुम करोगे क्या?''

''हम चूज़े पैदा करना चाहते हैं।''

''किसलिए?''



''यों ही,'' मीश्का ने कहा। ''चूज़ों के बिना मज़ा नहीं आता। देहात में रहनेवाले आप लोगों के पास चूज़े, गायें, सुअर, हंस – सभी कुछ होता है। लेकिन हमारे पास कुछ भी नहीं होता।''

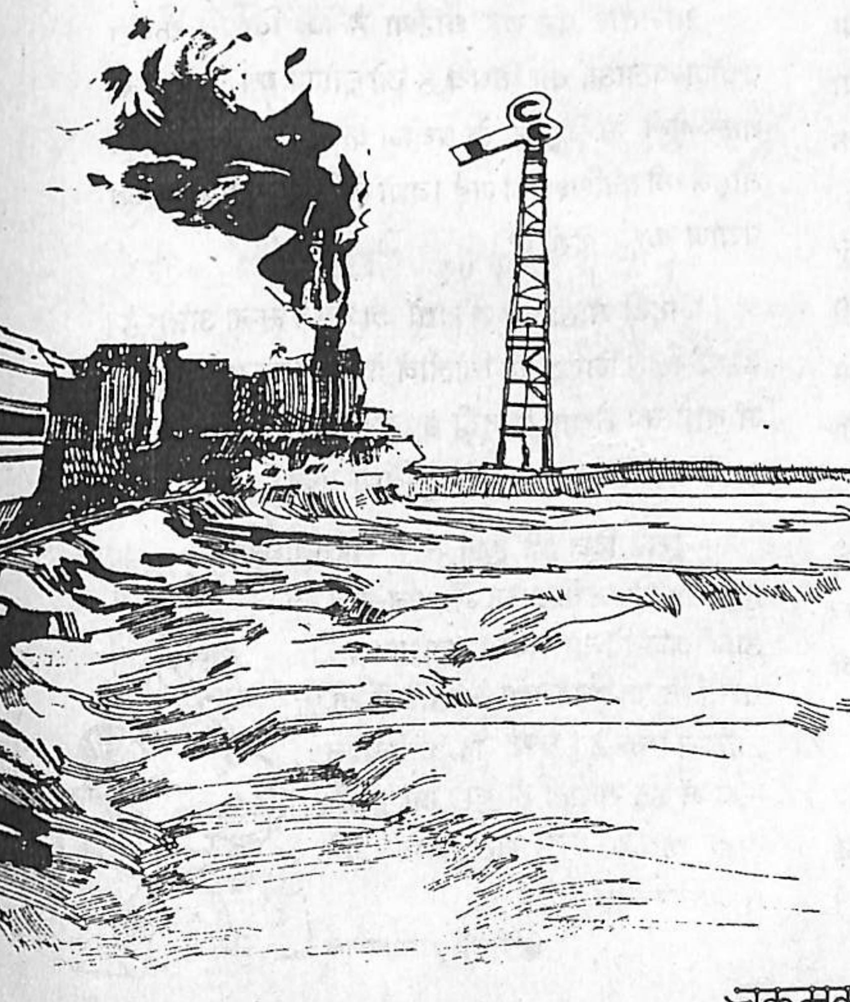
''ठीक है, लेकिन हम देहात में रहते हैं। शहर में गायें अच्छी तरह नहीं पाली जा सकतीं।''

''शायद, गायें नहीं पाली जा सकतीं, लेकिन छोटा जानवर तो पाला ही जा सकता है।''

''न, शहर में यह नहीं हो सकता। बड़ी मुश्किल उठानी पड़ती है,'' नताशा मौसी ने कहा।

''हमारे यहाँ एक आदमी ने पंछी पाल रखे हैं,'' मीश्का बोला। ''उसके पास कितने ही पिंजड़े हैं, जिनमें तरह-तरह की चिड़ियाँ हैं।''

''हाँ, लेकिन पंछियों को तो वह पिंजड़ों में रखता है। अपने चूज़ों को तुम पिंजड़ों में थोड़े ही रखोगे?''



''नहीं हम उनको रसोई-घर में रखेंगे। आप चिन्ता न कीजिए, हम उनके लिए कोई अच्छी जगह निकाल लेंगे। बस, हमें सिर्फ खूब बढ़िया अंडे दीजिए। बिल्कुल ताज़ा, नहीं तो उनमें से चूज़े नहीं निकलेंगे।''

''बहुत अच्छा, ले लो,'' नताशा मौसी ने कहा। ''मुझे मालूम है कि तुम्हें कैसे अंडे चाहिए। मेरी मुर्गियों ने अभी-अभी अंडे दिए हैं, इसलिए वे एकदम ताज़ा ही होंगे।''

नताशा मौसी रसोई-घर में गईं और वहाँ से ले आईं पंद्रह सुन्दर अंडे, जिनमें से हरेक चिकना, सफेद और बिल्कुल साफ था। उनको देखकर सहज ही जान पड़ता था कि वे ताज़ा हैं। मौसी ने उनको हमारी टोकरी में रख दिया और एक ऊनी दुशाले से उनको ढँक दिया, ताकि रास्ते में वे ठण्डे न हो जाएँ।

''अच्छा, जाओ। खुश रहो। अपने काम में सफल हो,'' नताशा मौसी ने दरवाज़े तक आकर हमें विदा करते हुए कहा।

अब बाहर अँधेरा फैलने लगा था। हम दोनों जल्दी-जल्दी स्टेशन की ओर बढ़े।

घर पहुँचने में हमें बहुत देरी हो गई और माँ ने मुझे खूब झिड़कियाँ दीं। मीश्का को भी उसकी माँ ने खूब झाड़ा। लेकिन हमें इससे ज़रा भी दुख न हुआ। दुख हुआ इस बात का कि रात में बहुत देर होने के कारण अंडों को सेने का काम हमें दूसरे दिन के लिए रखना पड़ा।

(अगले अंक में जारी)

चित्र : सौरभ दास



पिटारा उत्सव में बाल मेला

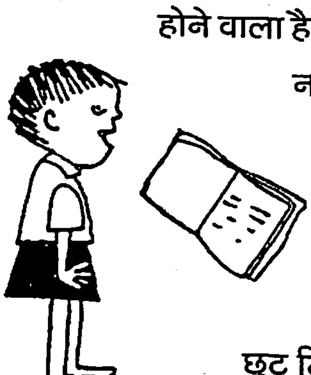


29-30 अप्रैल, 2000 को एकलव्य ने भोपाल में अपने बाल साहित्य केन्द्र 'पिटारा' के उद्घाटन के साथ बच्चों के लिए एक बाल-मेले का आयोजन भी किया। यह कार्यक्रम दोनों दिन शाम 4 बजे से 7 बजे तक चला। इस बाल-मेले मेंकई गतिविधियों के लिए अलग-अलग स्टॉल (कोने) लगाए गए। गतिविधियाँ थीं – चित्रकला, ओरीगेमी, पुस्तकालय गतिविधि, रचनात्मक लेखन, विज्ञान के प्रयोग, मिट्टी के खिलौने और प्रश्न-मंच।।

सालभर की स्कूल की पढ़ाई के बाद जब तुम्हारी छुट्टियाँ आती हैं, तो तुम क्या करना चाहते हो। छुट्टियाँ हुई नहीं कि सभी तरह-तरह के कार्यक्रम बनाने लगते हैं। अपने मन का पढ़ने, लिखने, अभिनय करने, घूमने, खेलने की योजना बनाते हो। ठीक है न!



ऐसे में यदि तुम्हें पता चले कि कहीं बाल मेला होने वाला है तो तुम वहाँ जाना चाहोगे या नहीं? बच्चों के लिए कुछ नया करने और सीखने का एक मज़ेदार तरीका है बाल-मेला। ऐसा मेला जहाँ तुम्हें अपने मन का कुछ करने की छूट मिले। एकलव्य ने भोपाल में छुट्टियाँ शुरू होने के साथ ही दो दिन के एक बाल-मेले का आयोजन किया।



एकलव्य द्वारा आयोजित 'पिटारा उत्सव' में पहले दिन चार-साढ़े चार बजे से बाल मेला शुरू हुआ। गतिविधियाँ शुरू हुईं। ओरीगेमी में कागज़ को मोड़कर अलग-अलग तरह के मॉडल बनाए गए।

पुस्तकालय गतिविधि के कोने में विविध प्रकार की पुस्तकें रखी थीं, जिन्हें बच्चे देख, पलट और पढ़ भी रहे थे। ये वे किताबें होती हैं जो उन्हें स्कूलों में उपलब्ध नहीं होतीं। इनमें कई तरह के विषयों की किताबें शामिल थीं।

कविता-कहानी लिखो के तम्बू में बच्चे अपने अनुभव, यात्रा, कहानी, कविता आदि लिख रहे थे। कुछ चित्र देखकर उन पर कहानी/कविता लिख रहे थे और कुछ कविता/कहानी पर चित्र बनाने की कोशिश भी कर रहे थे।

आमतौर पर यह धारणा है कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं का विषय है जो लोगों को डराता है। बाल-मेले में विज्ञान के प्रयोग कार्नर में इस डर को तोड़ने की कोशिश की गई। बच्चों ने विज्ञान के सामान्य प्रयोग करके देखे।

मिट्टी से खेलने में बच्चों को बहुत मज़ा आता हैं। इसके लिए मिट्टी के खिलौने के लिए लगाए गए टेंट में बच्चों को तैयार मिट्टी उपलब्ध कराई गई। इससे उन्होंने तरह-तरह की आकृतियाँ बनाईं।

दूसरे दिन भी इसी तरह गतिविधियाँ हुईं। कार्यक्रम के अन्त में प्रश्न-मंच का आयोजन किया गया। लगभग 150 बच्चों का जमघट मंच के सामने था। लेकिन एक-डेढ़ घण्टे तक चले प्रश्न मंच में 35 सवाल ही पूछे जा सके। सही जवाब देने वाले बच्चों को पुरस्कार दिए गए।



● गार्गी रामकृष्णन

अलविदा नवीन के सागर !

नवीन सागर नहीं रहे। गत 14 अप्रैल को भोपाल में उनका निधन हो गया। वे 51 वर्ष के थे। बड़ों के अलावा वे बच्चों के लिए भी लिखते थे। चित्रांकन करने में भी उनकी रुचि थी। बच्चों से उन्हें बहुत स्नेह था। उनकी कहानियों के पहले संग्रह 'उसका स्कूल' की शीर्षक कहानी घर में काम करने वाली एक लड़की के बचपन की कहानी थी। 'नींद से लम्बी रात' नाम से एक कविता संग्रह और बच्चों के लिए कविताओं का उनका एक संग्रह 'आसमान भी दंग' प्रकाशित हुए हैं। चकमक में नवीन सागर की पहली कविता अगस्त, 89 में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद से वे चकमक के स्थायी लेखक हो गए। उनकी कविताएँ और विषय लीक से हटकर होते थे। प्रचलित विषयों को भी वे अपने नाम के अनुरूप नए अंदाज़ में सामने लाते थे। जैसे 'गिरा पानी' कविता की ये पंक्तियाँ -

अरे! गिरने को है पानी
नंगे निकल पड़े गलियों में
करने शैतानी।
लहर गलियों में लहरानी
कमर तक डूब गए नंगे
तैरने में अब आसानी।

नवीन सागर की ऐसी अनेक कविताएँ और यादें हमेशा सबकी स्मृतियों में रहेंगी। उनकी एक कविता उन्हीं की लिखावट में यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। ऊपर बना छोटा-सा चित्रांकन भी उन्हीं का है। चकमक की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

रानो नाच रही है



रानो नाच रही है।

छोटे-छोटे पाँव
हाथ भी छोटे-छोटे
आँखें बड़ी-बड़ी हैं
रानो की मम्मी दरवाज़े बीच खड़ी हैं
और मनीषा
लेटी-लेटी पोथी बाँच रही है।
रानो नाच रही है।

नचते-नचते थक कर रानो
लेट गई बिस्तर पर
फेर रहे हैं हाथ प्यार से पापा उसके सिर पर।
नींद आई
परियों के सपने पास आ रहे हैं
आसमान में तारे लोरी गाते जा रहे हैं।

नवीन सागर



चित्र : विप्लव शशि



माथापच्ची

(1)

```
  9 ▲ 0 क
– क 0 9 ▲
---------
  8 5 0 5
```

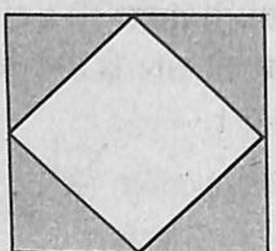
इस सवाल में '▲' और 'क' की जगह कौन से अंक रखने होंगे कि घटाने का यह सवाल सही हो जाए। क्या तुम हल करके बताओगे?

(2)

तुमने कभी इस तरह के सवाल हल किए हैं जिनमें एक शब्द के सिर और पूँछ वाले अक्षरों को काटकर एक नया शब्द बनाते हैं। या फिर इन सवालों को उल्टी तरफ से भी हल करते हैं। जैसे 'फुरसत' में से बना 'रस'।

यहाँ हम ऐसे ही कुछ दो अक्षर वाले शब्द दे रहे हैं। तुम्हें यह बताना है कि इनके सिर और पूँछ वाले अक्षर क्या रहे होंगे। शब्द हैं – कथा, नव, पल, लट, कट, वारि।

(3)



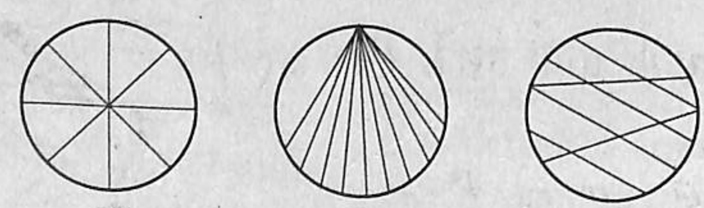
इस चित्र में एक वर्ग के अन्दर एक और वर्ग बना है। इस बड़े वर्ग का क्षेत्रफल छोटे वर्ग के क्षेत्रफल से कितना गुना होगा?

(4)

राम अपने घर से बहुत दूर नौकरी करता है। वह साल में बहुत कम ही अपने घर आ पाता है। आमतौर पर वह या तो 31 जनवरी को या 31 सितम्बर को या फिर 31 अप्रैल को घर आता है।

उसका दोस्त श्याम इनमें से किस एक तारीख को उसके घर जाए ताकि वह राम से मिल पाए?

(5)



'क' नाम के गोले में 4 लाइनें हैं 'ख' में 10 और 'ग' नाम के गोले में 6 लाइनें खींची गई हैं। बगैर गिने, एक नज़र देखकर बताओ कौन-सा गोला ज़्यादा हिस्सों में बँटा है। न बने तो फिर गिन लेना। पर पहले कोशिश तो करो।

(5)

एक व्यक्ति को एक नीबू चाहिए था। वह नीबू लेने बाग में गया तो फाटक पर उसे एक पहरेदार ने रोका। उस व्यक्ति की बात सुनकर पहरेदार ने कहा कि ''वह खुद जाकर नीबू तोड़ ले। लेकिन बाग से निकलते समय वह खुद जितने नीबू ले उससे एक ज़्यादा उसे यानी पहरेदार को दे जाए।''

वह आदमी बाग में थोड़ा आगे बढ़ा तो उसे एक और पहरेदार मिला। उसने कहा, ''नीबू तो तुम तोड़ लो। पर जितने नीबू तुम रखो, उससे एक ज़्यादा मुझे देना।''

नीबू तोड़ने से पहले उसे एक और पहरेदार मिला। उसने भी फिर वही शर्त रखी। वह व्यक्ति नीबू तोड़ने की बजाय बहुत देर तक गुणा-भाग करता रहा। उसे तो एक ही नीबू चाहिए था। लेकिन तीन–तीन पहरेदारों की शर्तें पूरी करने के लिए उसे कितने नीबू तोड़ने होंगे?

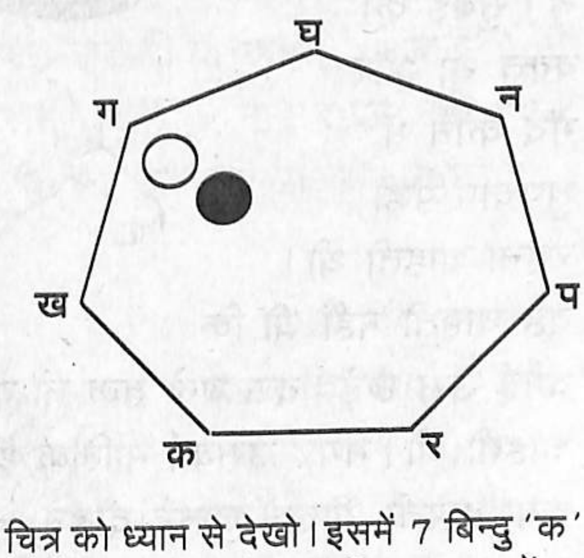
क्या तुम उसे बता सकते हो कि वह कुल कितने नीबू तोड़े?

(6)

इस चित्र में कुल कितने जानवर नज़र आ रहे हैं? क्या तुम सभी को पहचान गए। कौन-कौन से जानवर इस चित्र में छिपे हैं?



(7)



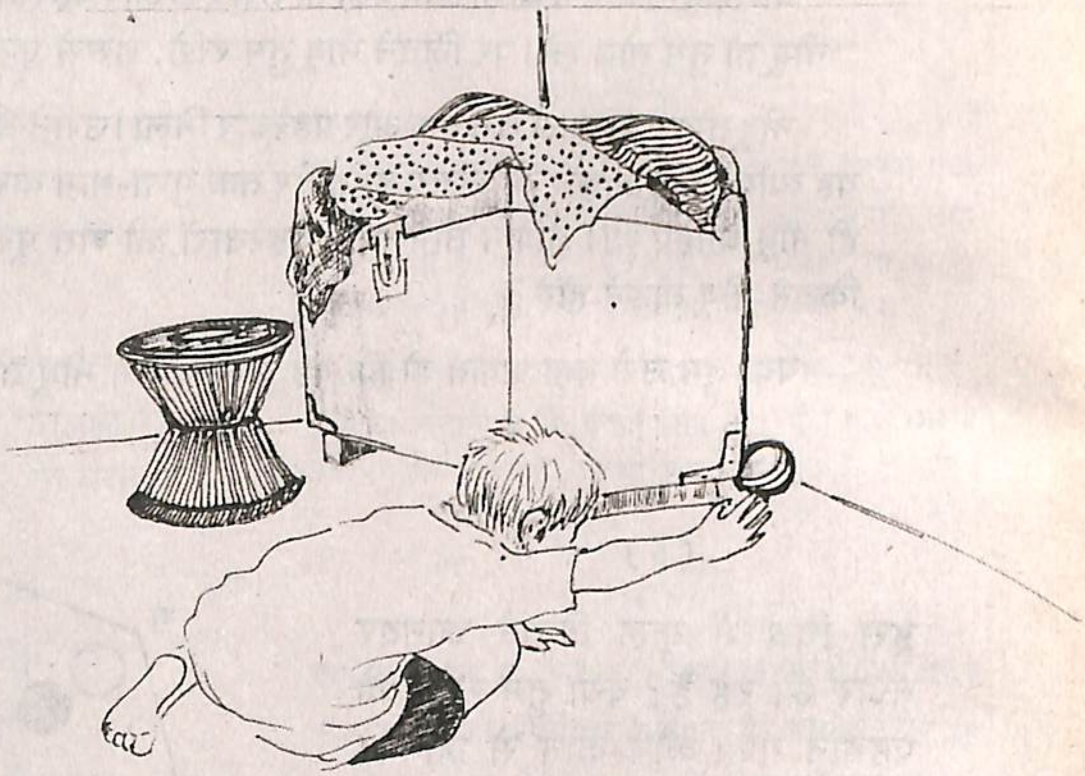
इस चित्र को ध्यान से देखो। इसमें 7 बिन्दु 'क' 'ख' 'ग' 'घ' और 'न' 'प' 'र' हैं। 'ग' बिन्दु पर तुम्हें एक सफेद और एक काली गेंद दिख रही होगी।

इन दो गेंदों में से सफेद एक बार में घड़ी की सुई की उल्टी दिशा में दो बिन्दु चलती है और काली घड़ी की सुई की दिशा में एक बिन्दु। यानी अभी की स्थिति में सफेद गेंद एक चाल में 'क' बिन्दु पर पहुँच जाएगी। जबकि काली गेंद एक चाल में 'घ' बिन्दु पर पहुँच जाएगी।

सवाल यह है कि कितनी चालों के बाद सफेद और काली गेंद फिर से 'ग' बिन्दु पर आएँगी?

बच्चा और गेंद

● विष्णु नागर



बच्चा गेंद खेलना चाहता था। माँ को कोई एतराज नहीं था। और बाप घर में था नहीं।

ठंड के दिन थे। सुबह का वक्त था और गेंद कोने में चुपचाप पड़ी रहना चाहती थी। वह चाहती नहीं थी कि कोई उसे छेड़े। दस बजे तक तो वह बिल्कुल हिलना-डुलना नहीं चाहती थी। मगर उसका मालिक था बच्चा। वह मानने वाला था भला? क्या करती, हिलने-डुलने-दौड़ने लगी। गुस्सा जताने के लिए एक बार गड्ढे में भी जा गिरी। बच्चा रोने लगा तो माँ ने गेंद निकाली। मगर गेंद का गुस्सा खत्म नहीं हुआ था। इस बार वह नाली में जा गिरी। फिर निकाला तो फिर सड़क पर दौड़ती चली गई और राहगीर के पैर का धक्का खाकर आगे चली गई।



माँ ने बच्चे को समझाया कि आज गेंद बड़ी शैतानी कर रही है। आओ, इसके साथ कमरे में खेलें। एक तरफ से माँ गेंद लुढ़काएगी, दूसरी ओर से बच्चा। लेकिन यह सुस्त खेल बच्चे को ज़्यादा देर तक



पसन्द नहीं आया। हालाँकि गेंद को इस तरह की छेड़-छाड़ फिर भी अच्छी लग रही थी। बल्कि अब उसकी सुस्ती उड़ गई थी और उसका भी खेलने को मन हो रहा था। बच्चा गेंद की इच्छा से बेखबर था। गेंद अपनी खेलने की इच्छा जताने के लिए लुढ़ककर घर के बीचोंबीच ऐसे आ गई कि बच्चा कहीं से भी आए-जाए तो उसकी निगाह ज़रूर गेंद पर पड़े। बच्चा गेंद देखेगा तो ज़रूर उसके साथ छेड़खानी करेगा। गेंद ने तय कर लिया था कि बच्चा अगर गलती से भी उसे टल्ला देगा तो ऐसे लुढ़कती-लुढ़कती दूर जाएगी कि बच्चे को अपनी ताकत पर कौतुहल होगा। कौतुहल में वह फिर खेलने लगेगा।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अलबत्ता गेंद माँ के पाँवों के नीचे ज़रूर आई। माँ ने बच्चे से पूछा कि वह गेंद खेलेगा। बच्चे ने नहीं कहा। माँ ने गेंद खिलौने के डिब्बे में रख दी।

गेंद ने डिब्बे में पहले से ही विराजमान शेर से कहा, खरगोश से कहा, भालू से कहा, हिरण से कहा, सेठ-सेठानी से कहा, बन्दर से कहा कि आओ, खेलो मेरे साथ, पर सब सुस्ती के मारे राज़ी नहीं हुए। गेंद ने कचरा ढोने वाले ट्रक से कहा कि वह ही ज़रा-सी सैर करा दे। मगर ट्रक भी अकड़ गया।



दुखी गेंद ने जब देखा कि कोई उसके साथ खेलने को राज़ी नहीं है तो वह उठी और उसने मगन होकर पोहे खाते बच्चे के सिर पर टप्पा मारा।

बच्चे को गेंद की यह शैतानी बिल्कुल पसन्द नहीं आई। बच्चा भी उठा और



उसने गेंद को सज़ा देने के लिए उसे निशाना साधकर दीवार पर मारा। हँसती-खिलखिलाती गेंद दुगने उत्साह से वापस आई और उसकी पोहे की प्लेट में ही गिर पड़ी। उसने फौरन पोहे के कई दाने अपने पर चिपका लिए। और कई नीचे ज़मीन पर गिरा दिए।

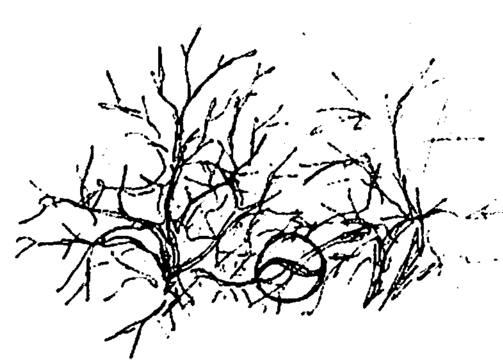
बच्चे को गेंद पर गुस्सा तो बहुत आया मगर उस समय सबसे ज़्यादा चिन्ता उसे पोहे की थी।

गेंद बच्चे को छेड़कर बहुत खुश हुई।



शाम को जब बच्चे ने गेंद की शिकायत अपने पापा से की तो गेंद डर गई। आँखें मिचमिचाकर सब सुनती रही कि कहीं उसे घर से निकाल न दिया जाए। ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। बच्चे को उसके पापा ने किसी और बात में बहला दिया।

गेंद ने अपनी खैर मनाई पर इससे शिक्षा कुछ भी नहीं ली। अगले दिन उसने फिर बच्चे को खिलाया भी और चिढ़ाया भी। रूठी भी और नाची भी। सुस्ती भी दिखाई और चुस्ती भी। एक बार तो गेंद महारानी की तरह छत पर जा बैठी और बच्चे को अँगूठा दिखाया। एक बार कँटीली झाड़ी में जाकर बैठ गई। एक बार पानी के पतीले में घुस गई। एक बार बक्सों की आड़ में छुप गई।

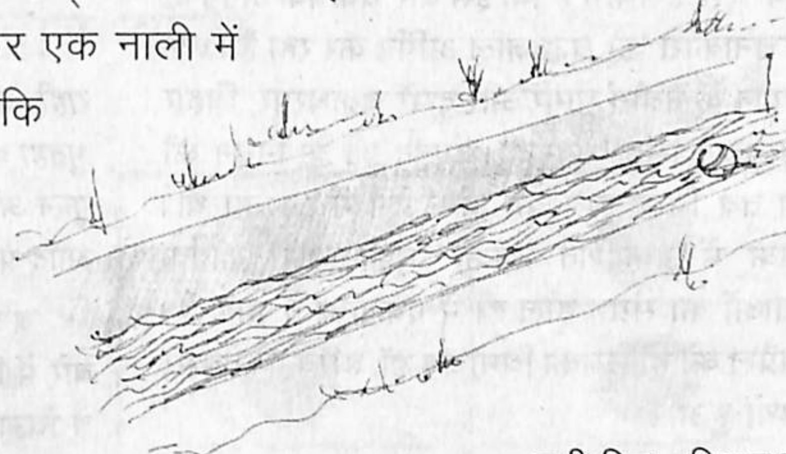


हर जगह से उसे निकाला गया और बच्चे के हाथ में दिया गया। एक बार बच्चे ने उसके ऊपर बैठने की कोशिश की। बच्चे

ने जैसे ही अपना सारा ज़ोर गेंद पर लगाया, गेंद ने शैतानी की और लपककर भाग गई। लेकिन बच्चे ने हार नहीं मानी। वह फिर गेंद पर बैठा। गेंद ने फिर उसे गिरा दिया।

चार–छह बार में गेंद की हड्डियाँ-पसलियाँ इतनी दुखने लगीं कि वह तंग होकर एक नाली में भाग गई। उसे क्या पता था कि नाली में तेज़ बहाव है। वह नाली से नाले में चली गई। उसे ताज़िन्दगी वहीं रहना पड़ा। उसने बच्चे को बहुत पुकारा - बहुत पुकारा।●

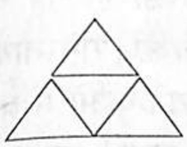




● सभी चित्र : विप्लव शशि

अप्रेल, 2000 के माथापच्ची के हल

1.



2. 16

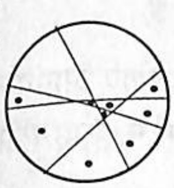
3. एक घंटा पाँच मिनट के बाद।

4. इसका उत्तर तो तुम यूँ ही समझ गए होगे, न समझे हो तो सवाल को एक बार फिर ध्यान से पढ़ो।

5. दाहिनी ओर।

6. 545–454–54–5–4 =28

7.



8. 12 सेंटीमीटर वाला घन एक पलड़े में और बाकी के तीन घन दूसरे पलड़े में।

9. इस सवाल में कुछ गलतियाँ छूट गई थीं। सवाल इस तरह से होगा –

1 – 2 = 3
X
4 ÷ 5 = 6
=
7 + 8 = 9

10.



छल्ला निकालने का एक तरीका यह है कि तुम अपनी रस्सी को बीच से मोड़ के पकड़ लो। फिर इस मुड़े हिस्से को तुम्हारे साथी की किसी एक कलाई और उससे लिपटी रस्सी के बीच में से निकालो। उसमें से उसका हाथ निकाल लो। तुम्हारी रस्सी को फिर से उसकी कलाई और रस्सी के बीच में से वापस निकाल लो।

वर्ग पहेली 104 का हल

न	■	त	क	ली	■	फ	स	ल
ज	न	म	■	पा	ती	■	मी	■
र	■	त्रा	■	पो	■	खो	प	रा
■	शा	■	अ	ती	त	■	■	म
च	म	च	म	■	गा	ड़ी	वा	न
तु	■	■	न	म	दा	■	दा	■
र	सो	ई	■	धु	■	म	■	स
■	पा	■	थो	क	■	लि	हा	ज
मा	न	वी	■	र	द	न	■	ल

वर्ग पहेली 104 का सही हल भेजने वाले एकमात्र पाठक हैं श्री हबीब अनवर राही, जावद, नीमच. म. प्र.। इन्हें मई, 2000 का अंक भेजा जा रहा है।

श्रद्धांजलि

रामवचनसिंह 'आनंद' नहीं रहे



यह एक दुखद संयोग है कि इस बार चकमक अपने दो प्रिय रचनाकारों को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। एक हैं भोपाल के नवीन सागर और दूसरे चक्रधरपुर, बिहार के रामवचन सिंह 'आनंद'। आनंद जी के निधन की सूचना तब मिली जब यह अंक प्रेस में जा रहा था। चकमक में प्रकाशित उनकी 'बूझो-बूझो' शीर्षक कविताओं का संग्रह हाल ही में एकलव्य ने छापा है। 29 अप्रैल को ही उसका विमोचन डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के हाथों हुआ।

आनंद जी का निधन 20 अप्रैल को हो गया था। किन्तु यह खबर हम तक देर से पहुँची। आनंद जी पिछले कुछ समय से बीमार थे। पिछले महीने वे अपने इलाज के सिलसिले में जमशेदपुर गए थे। वहाँ एक स्कूटर की टक्कर से उनकी रीढ़ की हड्डी में गम्भीर चोट पहुँची। उसके बाद से वे लगातार बिस्तर पर थे।

आनंद जी भी उन रचनाकारों में से थे जो चकमक के आरम्भ से उससे जुड़े रहे हैं। आनंद जी का जन्म 25 दिसम्बर, 1932 को आरा, बिहार में हुआ था। उन्हें बचपन से ही लिखने का शौक था। पाँचवे-छठवें दशक की प्रसिद्ध बाल पत्रिका 'बालसखा' से उन्होंने लिखना शुरू किया था। बाद में सभी बाल पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

विज्ञान विषय में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद वे बाकायदा प्रशिक्षण लेकर शिक्षक बन गए। चक्रधरपुर के मारवाड़ी उच्च विद्यालय में पहले वे शिक्षक हुए और फिर प्राचार्य के पद पर काम करते हुए 1992 में सेवानिवृत्त हुए। मूलतः शिक्षक होने के कारण ही वे बच्चों की प्रकृति को समझते थे और उनके लिए सार्थक रचनाएँ रच पाते थें।

बच्चों के लिए उन्होंने 20 से अधिक किताबें लिखीं। उनकी प्रकाशित किताबों में *बढ़े चलो तुम, नन्हें राही, बटोही और हंस, मेरा घर, अजगर से मुठभेड़, भुतहा कुआँ, दादाजी की बातें, चाचा नेहरू जिन्दाबाद, फूल और कलियाँ, चटकीले फूल और अँगलू-मँगलू* आदि प्रमुख हैं।

बच्चों के बीच काम करने वाले तरूणभाई ने उनके बारे में लिखा था, 'उनकी सबसे बड़ी विशेषता है कि वे विज्ञान को साहित्य में खींच लाते हैं। ज्ञान-विज्ञान जैसे कठिन विषय को बच्चों के लिए कविता और कहानियों में ढाल देना उनके लिए सरल है।'

यह कथन उन पर सौ फीसदी सही बैठता है। चकमक में प्रकाशित आनंद जी की अधिकांश कविताएँ विज्ञान विषय की ही थीं। इनमें *ठण्डी हो गई चाय* (उष्मा के संचरण पर), *मृग-मरीचिका* (रेगिस्तान में पानी का आभास), *भूत कुएँ में* (पुराने कुओं में बनने वाली गैस पर), प्रमुख थीं। 'बूझो-बूझो' शृंखला में जीव जन्तुओं पर आधारित कविता पहेलियाँ हैं। हर कविता किसी एक जीव की कुछ विशेषताओं यानी शरीर की बनावट, आदत, रहन-सहन के बारे में मज़ेदार ढंग से बताती है। अंत में इन तथ्यों के आधार पर जीव का नाम बूझना है। पहेलियों में जीवों के बारे में जो तथ्य लिए गए हैं वे पूरी तरह से वैज्ञानिक हैं।

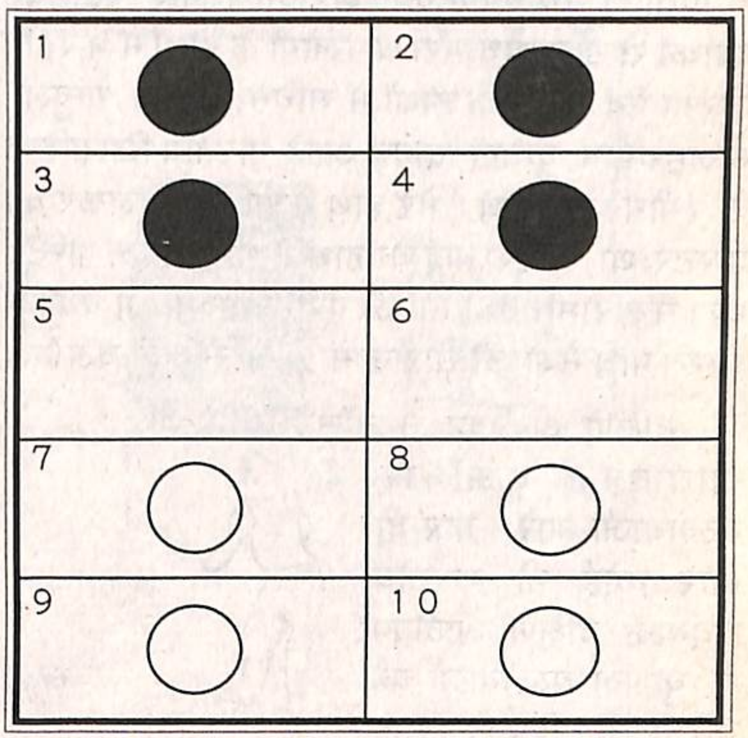
हिन्दी बाल कविता में योगदान के लिए आनंद जी को उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान ने 1995 में प. सोहनलाल द्विवेदी बालकविता सम्मान दिया था।

हमारा प्रयास होगा कि आनंद जी की कविताएँ अधिक से अधिक बच्चों तक पहुँचे, वे उन्हें पढ़ें और गुनगुनाएँ। वास्तविक रूप से उन्हें यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

● चकमक



आठ गोटी



सोलह गोटी या नौ गोटी तुम खेलते ही होगे। चलो लगभग इसी जैसा एक नया खेल खेलें।

इसके लिए दस खाने वाला एक खाका बनाना होगा। तुम सफेद कागज़ पर भी खाका बना सकते हो या फिर इसे सोलह गोटी खेलने की तरह जैसे ज़मीन पर ही चॉक या लकड़ी से उकेर लो।

इस खेल में दो खिलाड़ी एक साथ नहीं खेल सकते। अलग-अलग ही माथापच्ची करनी पड़ेगी। ऊपर के चार खानों में एक रंग की चार गोटी और नीचे के चार खानों में किसी दूसरे रंग की चार गोटी रखो। चित्र में चार सफेद और चार काली गोटियाँ इस्तेमाल की गई हैं। यानी बीच में दो खाने खाली रहेंगे।

इस आठ गोटी खेल के नियम सोलह गोटी या नौ गोटी से थोड़े अलग होंगे।

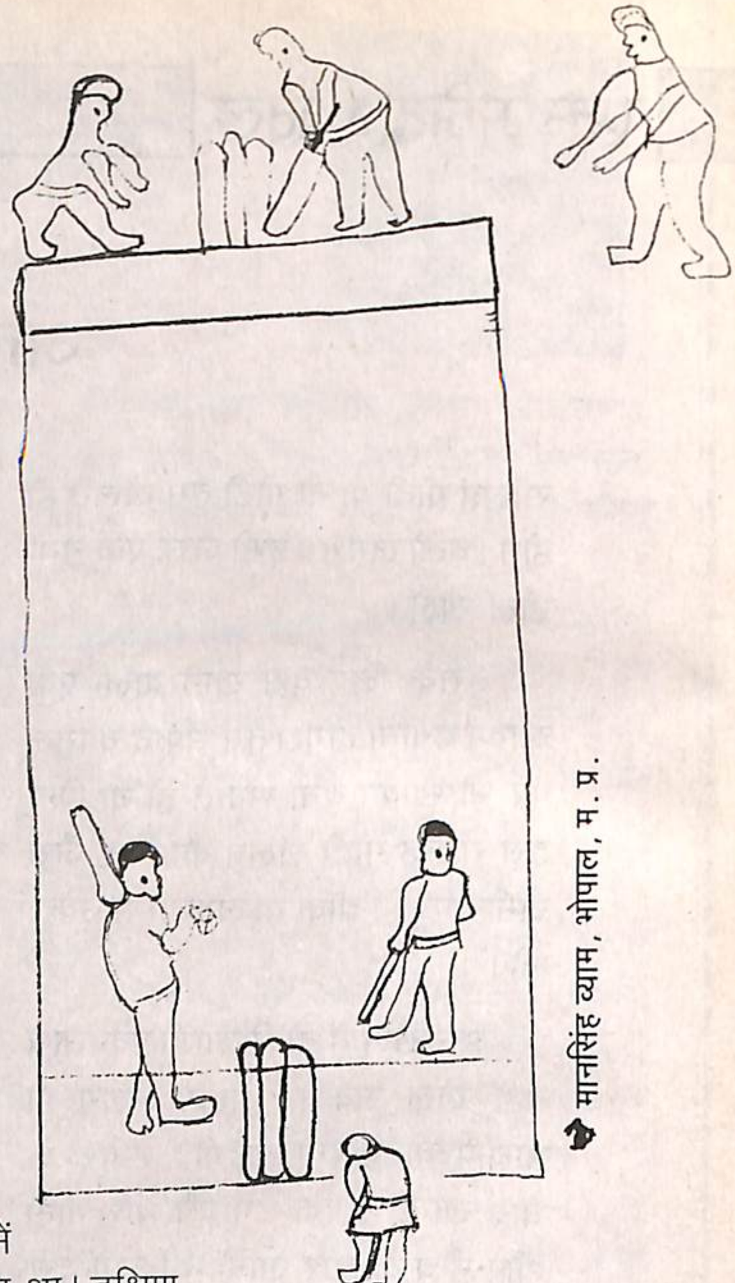
नीचे की गोटी सीधी चालों में ऊपर चढ़ेगी। अगर इनके सामने के खाने में कोई गोटी हो तो ये एक या दो खाने उछलकर भी चल सकते हैं। ऐसे ही ऊपर की गोटी नीचे आएगी। चाहो तो एक खाना चलो। अगर सामने गोटी हो तो उसके ऊपर से उछलकर दूसरे या तीसरे खाली खाने में चलो।

बस शर्त यह है कि दस चालों में नीचे की चार गोटियाँ ऊपर रखी गोटियों की जगह और ऊपर रखी चार गोटियाँ, नीचे की चार गोटियों की जगह आ जानी चाहिए।

इसको और मज़ेदार बनाने के लिए तुम इसे और ज़्यादा गोटी वाले खानों में खेलकर देखो। और चाहो तो नई-नई शर्तें भी ईज़ाद करो।

मेरा पन्ना

भारत ने कप जीता



मानसिंह व्याम, भोपाल, म.प्र.

बात 17 मार्च, 2000 की है हम सब यानि माँ, पिताजी, मेरा छोटा भाई और मैं प्रातः सात बजे बड़ौदा के आई. पी. सी. एल. स्टेडियम में होने वाले भारत-दक्षिण अफ्रीका मैच को देखने पहुँच गए। मेरे छोटे भाई समीर और मेरे बहुत आग्रह करने के बाद ही पिताजी मैच की टिकटें खरीदकर लाए। स्टेडियम दर्शकों से खचाखच भरा था। लोगों के हाथों में भारतीय तिरंगा एवं बहुतों के हाथों में सचिन, जडेजा, गांगुली, अज़हरुद्दीन, कुंबले, द्रविड़ आदि भारतीय खिलाड़ियों के रंगीन पोस्टर थे। मेरे हाथ में सचिन तेंदुलकर का पोस्टर था, व मेरे भाई के हाथ में गांगुली का पोस्टर था। मैच रोमांचक होने की पूरी संभावना थी क्योंकि भारत पाँच मैचों की सीरीज़ में 2–1 से आगे चल था।

दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतकर धुआँधार बल्लेबाजी आरंभ कर दी और कोई भी भारतीय गेंदबाज़ दक्षिण अफ्रीका के कुशल बल्लेबाज़ों को बाँधने में विफल रहा।



दर्शकों का विशाल जन समूह बार-बार भारत के पक्ष में नारे लगाकर भारतीय खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ा रहा था। दक्षिण अफ्रीका की अच्छी बल्लेबाज़ी पर भी हम सब ताली बजा रहे थे। परन्तु मन ही मन डर रहे थे कि कहीं मैच भारत के हाथों से न निकल जाए। अंत में दक्षिण अफ्रीका ने 4 विकेट पर 282 का विशाल स्कोर खड़ा कर दिया। सब खिलाड़ी भोजन के अवकाश के लिए मैदान से बाहर चले गए और हम सब दर्शक भी भारत की जीत की ईश्वर से दुआ माँगते हुए भोजन करने लगे।

भारतीय कप्तान सौरव गांगुली और विश्व के चोटी के बल्लेबाज़ सचिन तेंदुलकर के बल्ले शुरुआती ओवरों में ही आग उगलने लगे। बीस ओवरों में ही भारत ने बिना किसी क्षति के 127 रन बना लिए और भारत की जीत की आशा बँधने लगी। दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाज़ों की जमकर ठुकाई करने वाले गांगुली 87 के निजी स्कोर पर आऊट हो गए। परन्तु सचिन ने विस्फोटक एवं दृढ़ बल्लेबाज़ी द्वारा अपना शतक पूरा किया और अंत में भारत ने चार विकेट से मैच जीत लिया। हम सभी खुशी से उछल पड़े और इस बढ़िया प्रदर्शन के लिए भारतीय खिलाड़ियों की प्रशंसा करते हुए एवं पटाखे छोड़ते हुए हँसी-खुशी घर लौट आए।

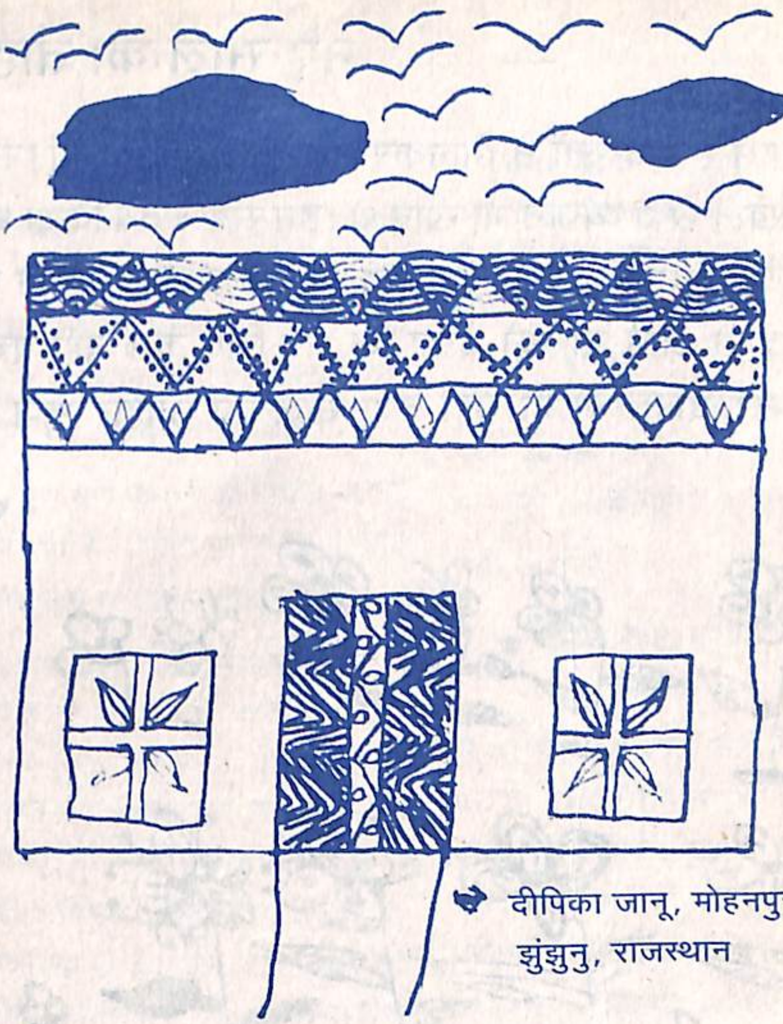
आभास परांजपे, दसवीं, बड़ौदा, गुजरात

गर्मी आई

गर्मी आई, गर्मी आई,
सूरज तेज, धूप चढ़ आई,
खाना खाके, पानी पीके,
तब घर से तुम निकलो भाई,
चुनिया मुनिया मिंटु सिंटु,
तुम सब घर में खेलो भाई,

तपती धरती गर्म हवाएँ,
सब जन-जन को अकुलाएँ,
ठण्डा पानी, पेड़ की छाया,
आप बताओ किसे न भाया,
घर में खेलो कूदो भाई,
गर्मी आई, गर्मी आई।

स्वर्णा शर्मा, छठवीं, खरोरा, रायपुर, म.प्र.



दीपिका जानू, मोहनपुर, झुंझुनु, राजस्थान

आदिमानव

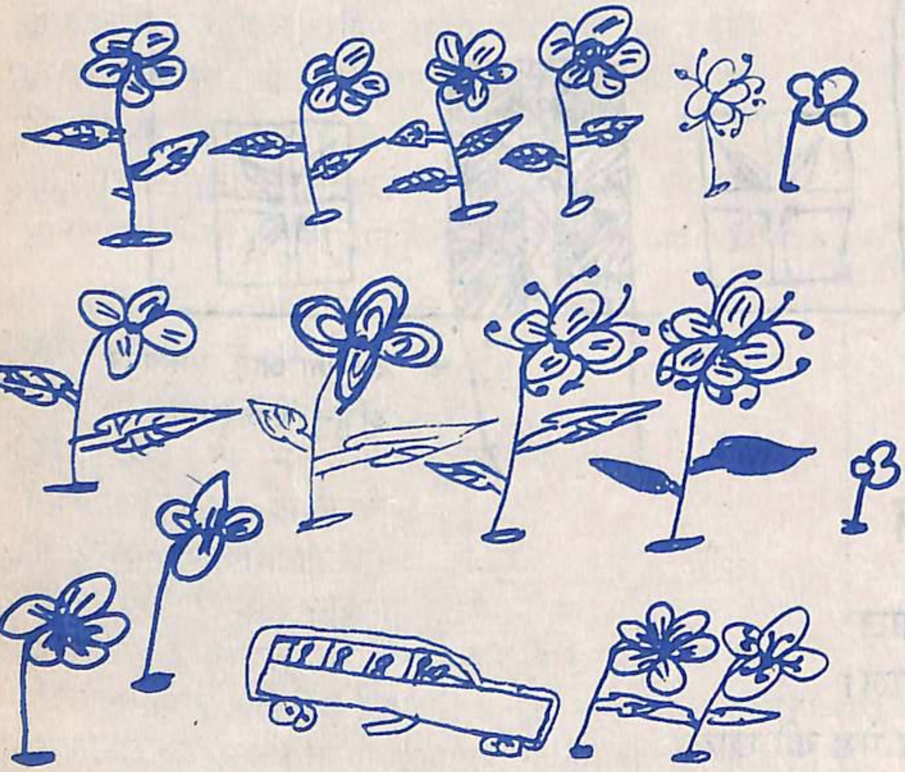
पहनता था वो जानवरों की खाल
साथ में करता था पत्ते इस्तेमाल।
खाता था फल-फूल और पेड़ की छाल
नहीं खाता था रोटी सब्जी दाल
पीने जाता पानी नदी और ताल।
पत्थरों के थे हथौड़े और भाल
छोटे पशुओं के लिए बिछाता था जाल।
शेर को देख होता था बुरा हाल
घर था गुफाएँ और पेड़ों की डाल।
नहीं सँवारता था अपने बाल
यह सीखा मैंने आदिमानव के बारे में,
यह है हमारी पढ़ाई का कमाल।

प्रहर्ष बिष्ट, पहली, चण्डीगढ़

नए साल का तोहफा

हम सब दोस्तों ने मिलकर नया साल मनाया था। सबने मिलकर कई तरह के खेल खेले थे व व्यंजन भी खाए थे। हम सब ने तय किया था कि सब एक-दूसरे को उपहार देंगे। हम लोगों ने एक-एक करके उपहार उठाने शुरू किए। आखिर में जब मेरी बारी आई तो मैंने देखा कि मेरे लिए कुछ नहीं बचा। मैं रोने लगी। पता चला कि मेरे दोस्तों ने ही मेरा नया साल का उपहार छुपा के रखा था।

अंकिता शर्मा, पाँचवीं, भोपाल, म. प्र.



जेने मिली, पहली, इटालीन, अरुणाचल प्रदेश

मेहनत का फल

एक बार मेरी मम्मी अजवाइन फेंक रही थी। मैंने वह अजवाइन लेकर अपने बगीचे में उगा दी। तब दस-बारह दिन में वह उग गई। तो उसे बकरी खा गई। तब मैं रोई तो मेरी मम्मी ने और अजवाइन दी और मैंने फिर से उगाई। तब वह उग गई। तो मैंने उसे खाया तो वह बहुत स्वादिष्ट लगी।

सय्यद इबरत बानो, सातवीं, धार, म.प्र.

भली लगती है छाँव

तड़के ही आ जाते हैं
लेकर सूरज भैया धूप,
हम सब की तो बात अनोखी
गए पेड़ के पत्ते सूख।

विद्यालय भी बन्द हो गए
सूरज जी के डर के मारे,
सबको है अपनी ही चिन्ता
हम सबको अब कौन दुलारे?

लू से बचने के कारण
कुत्ते भी हैं हाँफ रहे,
ठण्डी हवा भी इनके डर से
थर-थर, थर-थर काँप रहे।

डर के मारे धूप के
घर से ना निकले पाँव,
अच्छा लगता ठण्डा पानी
भली लगती है छाँव।

अभिषेक राय 'मिथिलेश', दसवीं,
लालपुर, सुपौल, बिहार

पाठक लिखते हैं

चकमक के जनवरी 2000 अंक में आपने आवरण पर मेरा चित्र छापा इसके लिए धन्यवाद। कम्प्यूटर Y2K पर आपने जो जानकारी दी है, वह मुझे बहुत पसंद आई।

● अभिलेख मिश्र, देहरादून, उ. प्र.

मैं आपको बहुत दिनों बाद पत्र लिख रही हूँ मगर मैं चकमक बराबर पढ़ती रहती हूँ।

हमारी सोसाइटी में नए साल की पार्टी थी। मैंने तथा मेरे दोस्तों ने मिलकर आपकी चकमक के सितम्बर 1996 के अंक में से 'नन्हा नकलची' नाटक किया। इस नाटक में हम लड़कियों ने ही काम किया था इसलिए हमने इसका नाम 'नन्हीं नकलची' कर दिया था।

● शिप्रा सिंग, दिल्ली

चकमक फरवरी 2000 अंक (173वाँ) पढ़ा। चकमक की प्रकाशक संस्था एकलव्य का बच्चों के लिए एक बहुत ही उत्तम वैज्ञानिक दूरदृष्टिपूर्ण उद्देश्य है, साधुवाद स्वीकारें।

इस बार कितनी ही रोचक अच्छी कविताएँ हैं – ऊँट, घर में पड़ी लड़ाई और कबूतर का सपना।

गप्पू की रंगीली दुनिया कुछ अधिक लम्बी हो गई। छोटे बच्चों के लिए छोटी-छोटी कहानियाँ ही ठीक हैं। कृपया मेरी विनम्र राय पर ध्यान दें। तुम भी लिखो स्तम्भ बच्चों की कल्पना शक्ति विकास हेतु बहुत अच्छा है। शिक्षाप्रद भी है। और हाँ, बच्चों को चित्र बनाने के लिए तो आप प्रोत्साहित करते ही हैं।

● शशिभूषण बढ़ोनी, उत्तरकाशी

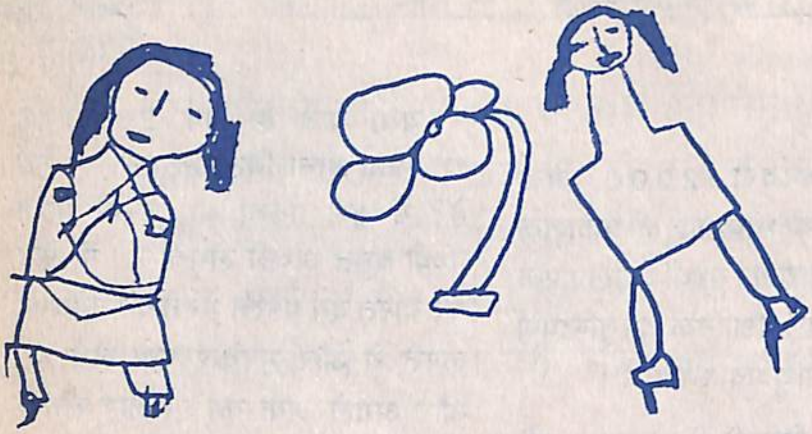
क्या बात है, वर्ष 2000 से चकमक आना बिल्कुल बन्द हो गई है? मैं उसे पढ़ता था, उसमें माथा पच्ची बहुत अच्छी लगती है। मैं और मेरे दोस्त वर्ग पहेली भरने की कोशिश करते थे और भरकर रख लेते थे। और अगले अंक का इंतज़ार करते थे। मुझे 3–4 महीने से कोई चकमक नहीं मिली।

● धनराम साहू, पनवाड़ी हाट, गुना, म.प्र.

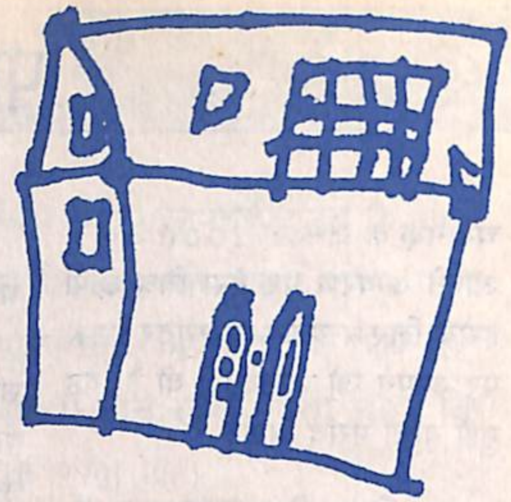
मैं आजकल रचनाएँ नहीं भेज रहा हूँ इसका कारण यह नहीं कि मैं अपनी कुछ रचनाएँ ना छपने के कारण नाराज़ हूँ। ऐसा कुछ नहीं है। मेरी परीक्षाएँ अभी भी चल रही हैं। परीक्षाओं के कारण आपको रचनाएँ नहीं भेज सका। जल्दी ही भेजूँगा।

● नकुल कुन्द्रा, जालन्धर, पंजाब

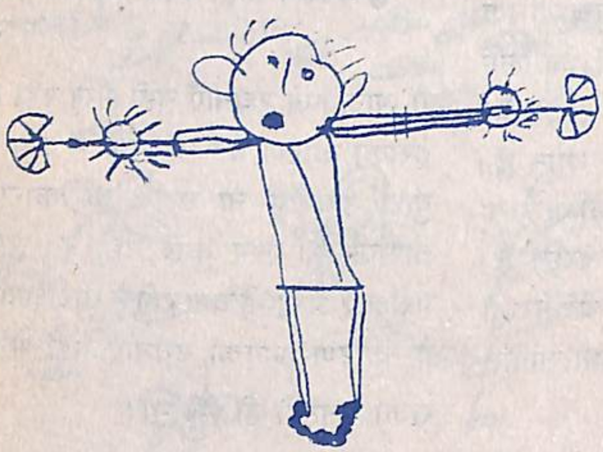
चित्रों का पन्ना . . .



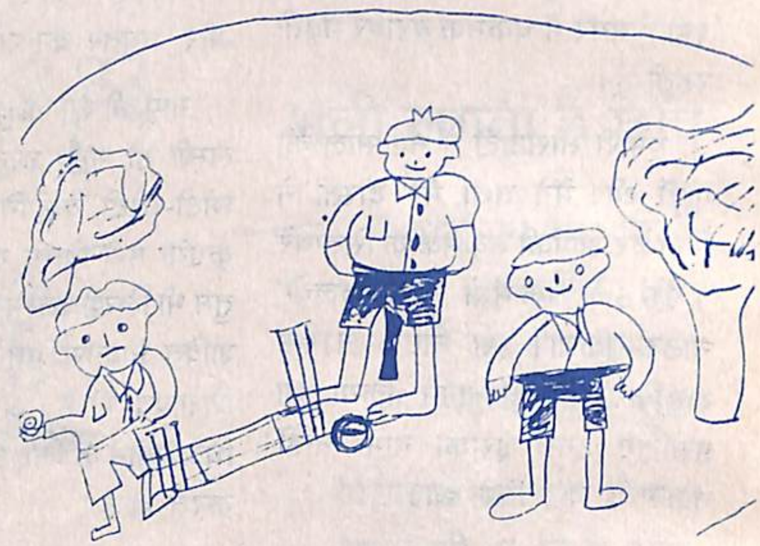
कुमिली मेले, चार वर्ष, एटालिन, अरुणाचल प्रदेश



पार्थ गिरि, चार वर्ष, इन्दौर, म. प्र.



आकांक्षा क्षत्री, कोरजा, बिलासपुर, म. प्र.



मोनू कुर्मी, दूसरी, रहली,

यहाँ से काट लें

चकमक के सदस्य बनें आप : उपहार पाएँ दोस्त

आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं। अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन | | | | | |

29–30 अप्रैल, 2000 को स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर तथा स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग से एकलव्य के पिटारा उत्सव में बालमेले का आयोजन हुआ।



◀ बालमेले में मिट्टी के खिलौने बनाते बच्चे।





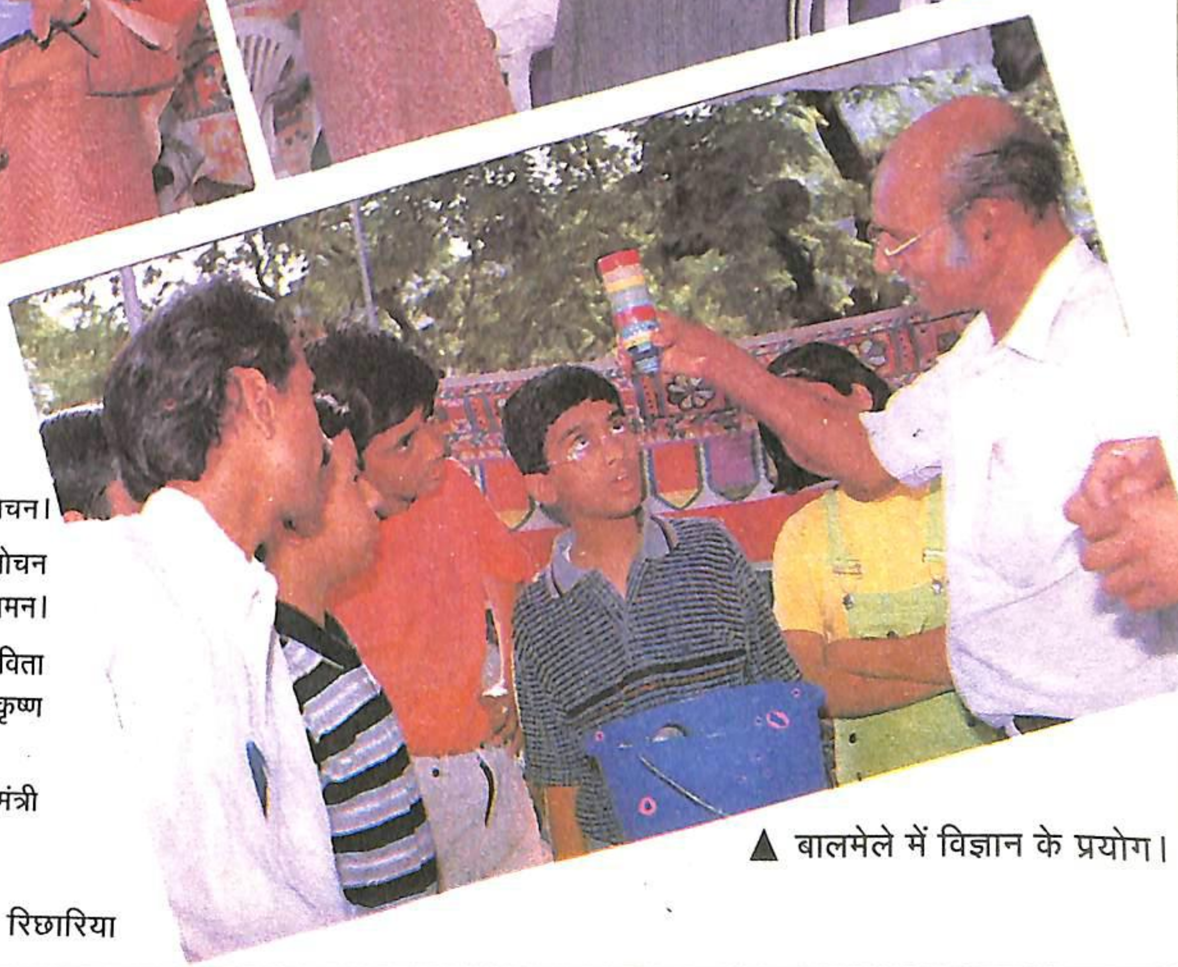
▲

एकलव्य द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन।

बाएँ : 'नई सवारी' कविता संग्रह का विमोचन हुआ सुश्री विभा देवसरे के हाथों। साथ हैं अमन।

दाएँ : श्रीरामवचन सिंह आनंद की कविता पुस्तक 'बूझो–बूझो' का विमोचन डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने किया। साथ हैं सुनीता।

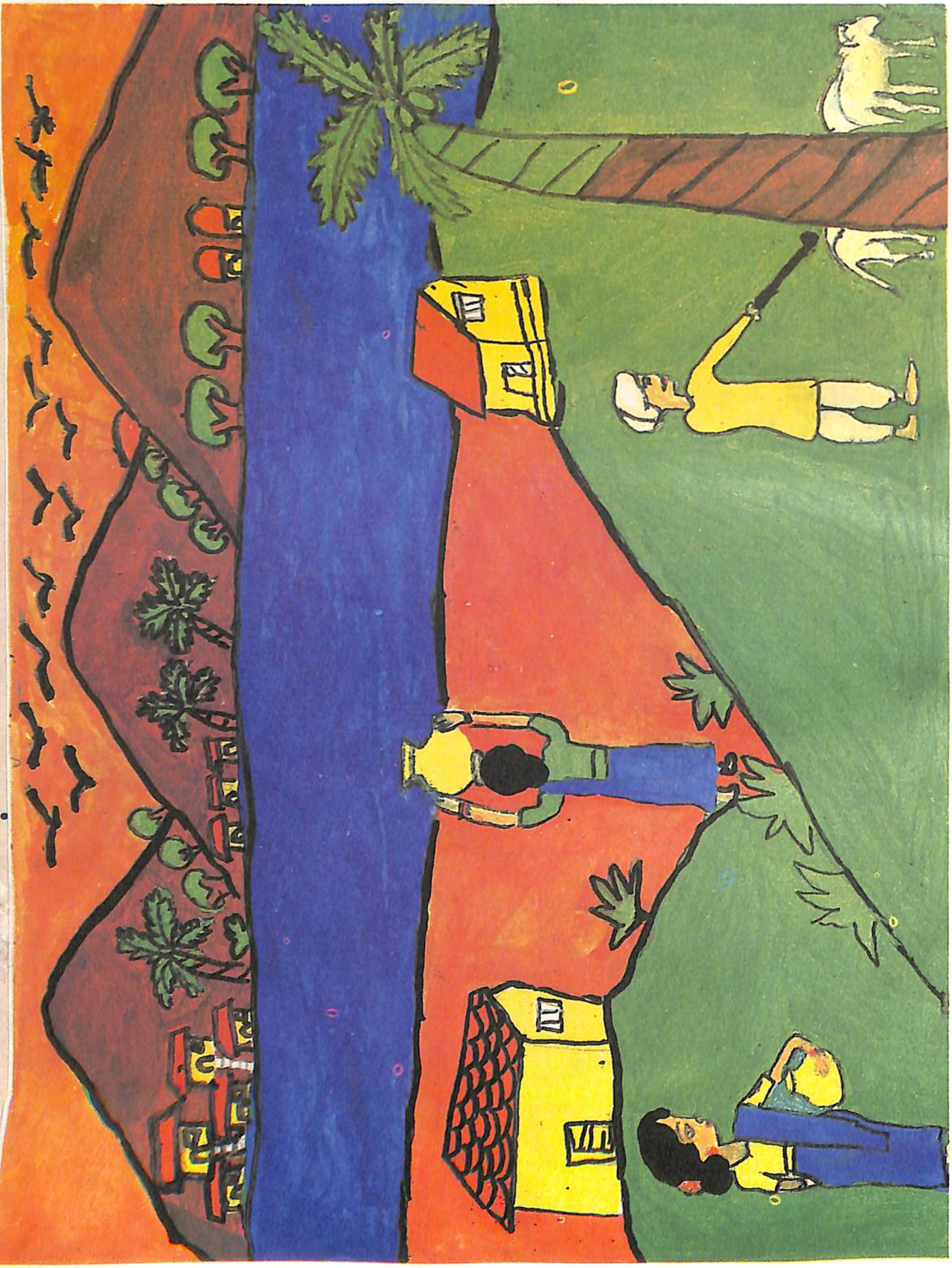
इस अवसर पर म.प्र. के स्कूल शिक्षामंत्री श्री महेन्द्र बौद्ध भी उपस्थित थे।



▲ बालमेले में विज्ञान के प्रयोग।

छाया : भावना जायसवाल व नीरज रिछारिया

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/2000



● नेहा किरण कार्णिक, छठवीं, वड़ोदा, गुजरात

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना